

मकवानपुरका बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको अध्ययन

त्रिभुवन विश्वविद्यालय,
मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्कायअन्तर्गत
वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस, नेपाली विभाग, भरतपुर,
चितवनको स्नातकोत्तर तह, द्वितीय वर्ष,
दसौं पत्रको प्रयोजनार्थ
प्रस्तुत

अध्ययनपत्र

अध्ययनकर्ता
सागरप्रसाद खतिवडा
क्याम्पस रोल न. १२
रजिस्ट्रेसन न. ६३८३६-८८
नेपाली विभाग
त्रिभुवन विश्वविद्यालय
वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस
भरतपुर, चितवन
२०६७

मकवानपुरका बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको अध्ययन

त्रिभुवन विश्वविद्यालय,
मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्कायअन्तर्गत
वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस, नेपाली विभाग, भरतपुर,
चितवनको स्नातकोत्तर तह, द्वितीय वर्ष,
दसौँ पत्रको प्रयोजनार्थ
प्रस्तुत

अध्ययनपत्र

अध्ययननिर्देशक
होमनाथ सापकोटा

अध्ययनकर्ता
सागरप्रसाद खतिवडा

क्याम्पस रोल न. १२
रजिस्ट्रेशन न. ६३८३६-८८
नेपाली विभाग
त्रिभुवन विश्वविद्यालय
वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस
भरतपुर, चितवन

२०६७

त्रिभुवन विश्वविद्यालय
मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय
वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस, भरतपुर, चितवन
नेपाली विभाग

स्वीकृतिपत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्कायअन्तर्गत वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस भरतपुरका विद्यार्थी सागरप्रसाद खतिवडाले नेपाली एम्.ए. दसौँ पत्रको प्रयोजनका निम्ति प्रस्तुत गरेको **मकवानपुरका बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको अध्ययन** शीर्षकको यो अध्ययनपत्र स्वीकृत गरिएको छ ।

मूल्याङ्कनसमिति

प्रा.डा. नारायणप्रसाद खनाल
विभागीय प्रमुख

हस्ताक्षर

सहप्राध्यापक होमनाथ सापकोटा
अध्ययननिर्देशक

हस्ताक्षर

.....
बाह्यपरीक्षक

हस्ताक्षर

मिति : २०६७/ /

सकवानपुरका बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको अध्ययन

सागरप्रसाद खतिवडा

२०६७

पहिलो परिच्छेद
अध्ययनपत्रको परिचय

दोस्रो परिच्छेद
बनकरिया जातिको जातिगत परिचय

तेस्रो परिच्छेद

मकवानपुरका बनकरिया जातिमा
प्रचलित लोकसाहित्यको वर्गीकरण

चौथो परिच्छेद
बनकरिया जातिमा प्रचलित
लोकसाहित्यको अध्ययन

पाँचौं परिच्छेद
उपसंहार

सन्दर्भग्रन्थसूची

परिशिष्ट खण्ड

परिशिष्ट 'ख' : छायाचित्र (फोटो)



स्थानीय श्री पशुपतिनाथ माध्यमिक विद्यालयमा अध्ययनरत बनकरिया बालिकाहरू



स्थानीय बनकरिया महिलाहरू प्रौढ साक्षरता कार्यक्रममा सहभागी

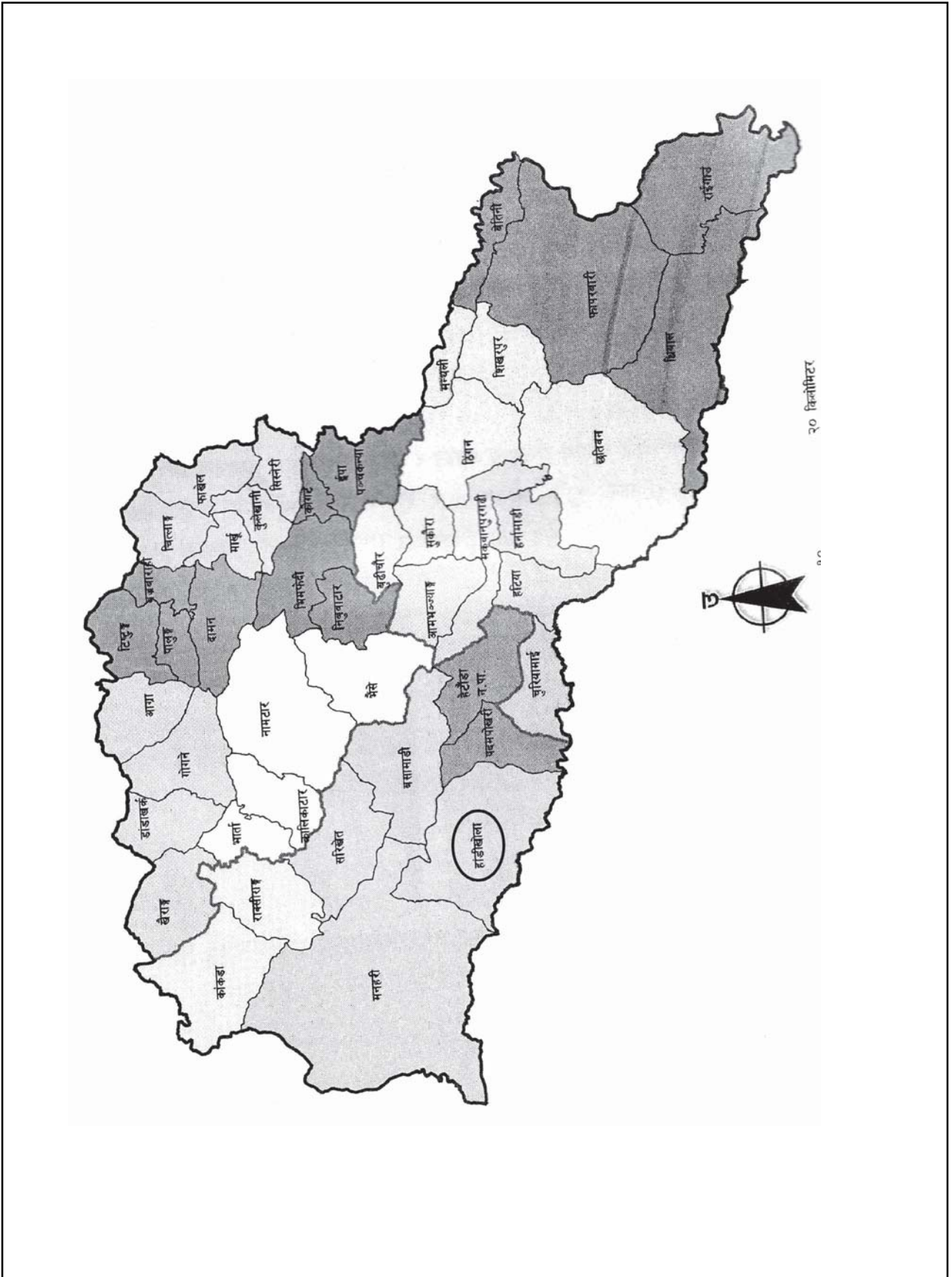


मकवानपुर जिल्ला विकास कार्यालयबाट राहत वितरित कार्यक्रम सहभागी स्थानीय बानकरियाहरू



स्थानीय बानकरिया बालिकाहरू लोकगीत गाउँदै

परिशिष्ट 'ग' : हाँडीखोला गा.वि.स. सङ्केतित नक्सा



अध्ययनपत्र निर्देशकको मन्तव्य

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस, भरतपुर, नेपाली विभागको स्नातकोत्तर दोस्रो वर्षका छात्र सागरप्रसाद खतिवडाले **मकवानपुरका बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको अध्ययन** शीर्षकको अध्ययनपत्र मेरा निर्देशनमा तयार पार्नुभएको हो । निकै अध्ययन गरी परिश्रमपूर्वक तयार पारिएको प्रस्तुत अध्ययनकार्यबाट म पूर्ण सन्तुष्ट छु र यसको आवश्यक मूल्याङ्कनका लागि विभागसमक्ष सिफारिस गर्दछु ।

मिति : २०६७/ /

होमनाथ सापकोटा

सहप्राध्यापक

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस

नेपाली विभाग

भरतपुर, चितवन

कृतज्ञता ज्ञापन

मकवानपुरका बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको अध्ययन शीर्षकमा आधारित प्रस्तुत अध्ययनपत्र सहप्राध्यापक श्री होमनाथ सापकोटाको निर्देशनमा तयार पारेको हुँ । आफ्नो अमूल्य समय दिई स्नेहपूर्वक कुशल निर्देशन गरिदिनुहुने सहप्राध्यापक होमनाथ सापकोटाप्रति म सर्वप्रथम हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु । प्रस्तुत अध्ययनपत्रका लागि मैले विभागमा प्रस्तुत गरेको अध्ययनप्रस्ताव स्वीकृत गरी अध्ययनकार्य गर्ने महत्त्वपूर्ण अवसरसमेत प्रदान गर्नुहुने वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस नेपाली विभागका विभागीय प्रमुख प्रा.डा. नारायणप्रसाद खनालज्यू तथा नेपाली विभागका सम्पूर्ण गुरुजनप्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु ।

यो अध्ययनपत्र तयार पार्ने क्रममा विभिन्न अध्ययनपत्र तथा पत्रपत्रिका उपलब्ध गराई सहयोग पुऱ्याउने वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस पुस्तकालय भरतपुर, जिल्ला विकास समिति मकवानपुर, तथाडक शाखा कार्यालय मकवानपुर, हाँडीखोला गा.वि.स. मकवानपुर तथा जोजसका पुस्तक र लेखहरू पढेर यो अध्ययनपत्र तयार भयो ती सम्पूर्ण लेखक तथा विद्वान्वर्गप्रति कृतज्ञता ज्ञापन गर्नु म आफ्नो कर्तव्य ठान्दछु ।

यो अध्ययनपत्र तयार पार्ने सिलसिलामा मूलसामग्री सङ्कलन गर्दा हार्दिकताका साथ सहयोग पुऱ्याउने स्थानीय श्री धोबे बनकरिया, गोपाल बनकरिया, सन्तमाया बनकरिया, शिक्षक श्री कृष्णप्रसाद पौडेल, हाँडीखोला गा.वि.स. कार्यालय सहायक विदुर पाठक, स्थानीय गोपाल पौडेल, बालमुकुन्द पौडेल, पार्वती ढकाल, गङ्गामाया चेपाङ, सनित्रा चेपाङ, लालुमाया चेपाङलाई म हार्दिक धन्यवाद दिन चाहन्छु । लेखरचना, मौखिक जानकारी तथा भाषानुवाद गरी सहयोग पुऱ्याउनु हुने सम्बद्ध महानुभाव तथा अध्ययनपत्र लेखनमा मलाई सहयोग र प्रोत्साहन दिने जीवनसङ्गिनी मन खतिवडालाई समेत धन्यवाद दिन चाहन्छु । यस अध्ययनपत्रलाई यथाशक्य छिटो र शुद्ध टङ्कण गरी सहयोग पुऱ्याउनु हुने कम्प्युटर केयर एन्ड डिजाइनिङ सेन्टर-नारायणगढका दीपेन्द्रकुमार जोशी 'निक' लाई समेत हार्दिक धन्यवाद दिन चाहन्छु ।

अन्त्यमा यस अध्ययनपत्रको मूल्याङ्कनका लागि नेपाली विभाग, वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस भरतपुरसमक्ष प्रस्तुत गर्दछु ।

अध्ययनकर्ता

मिति : २०६७/ /

सागरप्रसाद खतिवडा

क्याम्पस क्र.स. : १२/०६१/०६२

त्रि.वि.द.स. : ६३८३६-८८

नेपाली विभाग

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

वीरेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस

भरतपुर, चितवन

२०६७

सङ्क्षेपीकृत शब्दसूची

यस अध्ययनपत्रमा प्रयोग गरिएका शब्दहरूका सङ्क्षेपीकृत रूप यसप्रकार छन् :

| | |
|----------|------------------------|
| क्र.स. | क्रमसङ्ख्या |
| कि.मि. | किलोमिटर |
| गा.वि.स. | गाउँ विकास समिति |
| जि.वि.स. | जिल्ला विकास समिति |
| डा. | डाक्टर |
| त्रि.वि. | त्रिभुवन विश्वविद्यालय |
| द.स. | दर्तासङ्ख्या |
| प्रा. | प्राध्यापक |
| पृ. | पृष्ठ |
| वि.सं. | विक्रम संवत् |
| संस्क. | संस्करण |
| सम्पा. | सम्पादक |
| हे.न.पा. | हेटौंडा नगरपालिका |

विषयसूची

- (क) अध्ययनपत्रको स्वीकृतिपत्र
- (ख) अध्ययनपत्र निर्देशकको मन्तव्य
- (ग) कृतज्ञताज्ञापन
- (घ) सङ्क्षेपीकृत शब्दसूची
- (ङ) तालिकासूची

पहिलो परिच्छेद अध्ययनपत्रको परिचय

| | | |
|-------|----------------------------|---|
| १.१ | अध्ययनशीर्षक | १ |
| १.२ | अध्ययनप्रयोजन | १ |
| १.३ | विषयपरिचय | १ |
| १.४ | समस्याकथन | १ |
| १.५ | अध्ययनको उद्देश्य | २ |
| १.६ | पूर्वकार्यको समीक्षा | २ |
| १.७ | अध्ययनको औचित्य र महत्त्व | ३ |
| १.८ | क्षेत्र र सीमा | ३ |
| १.९ | सामग्रीसङ्कलन र अध्ययनविधि | ३ |
| १.९.१ | क्षेत्र अध्ययन | ३ |
| १.१० | अध्ययनपत्रको रूपरेखा | ३ |

दोस्रो परिच्छेद बनकरिया जातिको जातिगत परिचय

| | | |
|-----|----------------|---|
| २.१ | परिचय | ५ |
| २.२ | सामाजिक अवस्था | ५ |
| २.३ | भाषा | ६ |

| | | |
|-----|---------------------------|---|
| २.४ | धर्मसंस्कृति | ६ |
| २.५ | शैक्षिक तथा आर्थिक अवस्था | ७ |
| २.६ | निष्कर्ष | ७ |

तेस्रो परिच्छेद मकवानपुरका बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको वर्गीकरण

| | | |
|-------|---|----|
| ३.१ | परिचय | ९ |
| ३.२ | लोकसाहित्यको विधागत वर्गीकरण | १० |
| ३.३ | बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको विधागत वर्गीकरण | १२ |
| ३.३.१ | बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकगीतको वर्गीकरण | १२ |
| ३.३.२ | बनकरिया जातिमा प्रचलित लोककथाको वर्गीकरण | १४ |
| ३.३.३ | बनकरिया जातिमा प्रचलित गाउँखाने कथाको वर्गीकरण | १५ |
| ३.३.४ | बनकरिया जातिमा प्रचलित उखान/टुक्काको वर्गीकरण | १७ |
| ३.३.५ | निष्कर्ष | १८ |

चौथो परिच्छेद बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको अध्ययन

| | | |
|-------|--------------------------|----|
| ४.१ | लोकगीतको अध्ययन | २० |
| ४.१.१ | वनमा काँडा छु | २० |
| ४.१.२ | ठाडो खोला | २१ |
| ४.१.३ | फूलमयाको गाउँ | २१ |
| ४.१.४ | अघि जाऊँ सानीकान्छी | २२ |
| ४.१.५ | भोर्लाको पातमा | २३ |
| ४.१.६ | मलाई छोडी कहाँ गयौ ? | २४ |
| ४.१.७ | न्वागीगीत | २४ |
| ४.१.८ | आशीर्वादमन्त्र | २५ |
| ४.१.९ | निष्कर्ष | २६ |
| ४.२ | लोककथाको अध्ययन | २६ |
| ४.२.१ | राजाका सातभाइ छोरा | २६ |
| ४.२.२ | भ्यागुताले हात्ती निलेको | २७ |
| ४.२.३ | टुहुरी छोरी | २९ |

| | | |
|-------|-----------------------|----|
| ४.२.४ | राजाको छोरा | ३० |
| ४.२.५ | राजाको आयु | ३१ |
| ४.२.६ | कुखुराको माइत | ३२ |
| ४.२.७ | मान्छे र वनमान्छे | ३४ |
| ४.२.८ | टुहुरो | ३५ |
| ४.२.९ | निष्कर्ष | ३६ |
| ४.३ | गाउँखाने कथाको अध्ययन | ३६ |
| ४.३.१ | निष्कर्ष | ३८ |
| ४.४ | उखान/टुक्काको अध्ययन | ३८ |
| ४.५ | निष्कर्ष | ३९ |

पाँचौँ परिच्छेद उपसंहार

| | |
|-------------------|----|
| उपसंहार | ४१ |
| सन्दर्भग्रन्थसूची | ४४ |

परिशिष्ट खण्ड

परिशिष्ट 'क' सङ्कलन खण्ड

| | | |
|-----|------------------------------|----|
| (अ) | नेपाली मूलपाठ | ४५ |
| १. | लोकगीत | ४५ |
| | १.१ वनमा काँडा छ | ४५ |
| | १.२ ठाडो खोला | ४६ |
| | १.३ फूलमयाको गाउँ | ४६ |
| २. | लोककथा | ४७ |
| | २.१ राजाका सातभाइ छोरा | ४७ |
| | २.२ भ्यागुताले हात्ती निलेको | ४८ |
| | २.३ टुहुरी छोरी | ४९ |
| | २.४ राजाको छोरा | ५१ |
| | २.५ राजाको आयु | ५२ |
| ३. | गाउँखाने कथा | ५२ |
| ४. | उखान/टुक्का | ५३ |

| | | |
|-----|--|----|
| (आ) | बनकरिया भाषा : मूलपाठ | ५३ |
| | १. लोकगीत | ५४ |
| | १.१ अघि बढ्चु हुसकाया (अघि जाऊँ सानीकान्छी) | ५४ |
| | १.२ आम्फा जेसा (भोर्लाको पातमा) | ५५ |
| | १.३ डाको किमपा (मलाई छोडी कहाँ गयो ?) | ५५ |
| | १.४ न्वागीगीत | ५५ |
| | १.५ आशीर्वादमन्त्र | ५६ |
| | २. लोककथा | ५६ |
| | २.१ बाको माइत (कुखुराको माइत) | ५६ |
| | २.२ मान्ता र चिडलान (मान्छे र वनमान्छे) | ५७ |
| | २.३ भ्यान्जी बेला (टुहुरो) | ५८ |
| | ३. गाउँखाने कथा | ५९ |
| | ४. उखान/टुक्का | ५९ |
| | परिशिष्ट 'ख' छायाचित्र (फोटो) | ६० |
| | १. स्थानीय श्री पशुपतिनाथ माध्यमिक विद्यालयमा अध्ययनरत बनकरिया बालिकाहरू | ६० |
| | २. स्थानीय बनकरिया महिलाहरू प्रौढ साक्षरता कार्यक्रममा सहभागी | ६० |
| | ३. मकवानपुर जिल्ला विकास कार्यालयबाट राहत वितरित कार्यक्रममा सहभागी स्थानीय बनकरियाहरू | ६१ |
| | ४. स्थानीय बनकरिया बालिकाहरू लोकगीत गाउँदै | ६१ |
| | परिशिष्ट 'ग' हाँडीखोला गा.वि.स. सङ्केतित नक्सा | ६२ |

पहिलो परिच्छेद अध्ययनपरिचय

१.१ अध्ययनशीर्षक

प्रस्तुत अध्ययनपत्रको शीर्षक **मकवानपुरका बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको अध्ययन** रहेको छ ।

१.२ अध्ययनप्रयोजन

प्रस्तुत अध्ययनपत्र त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र सङ्कायअन्तर्गत नेपाली विषयको स्नाकोत्तर तह (एम.ए.) दोस्रो वर्षको दसौँ पत्रको प्रयोजनार्थ प्रस्तुत गरिएको छ ।

१.३ विषयपरिचय

लोकसाहित्यको थलो लोकजीवन हो । सहरिया, शिक्षित, पठित समाजभन्दा पृथक् एकान्त अर्थात् वनजङ्गलका छेउछाउमा बसोबास गर्दैआएका बनकरिया जातिको जीवनपद्धति हालसम्म पनि पूर्णरूपमा लोकजीवनमा नै आधारित छ । यो अल्पसङ्ख्यक आदिवासी जातिको रूपमा बसोबास गर्दै आइरहेको छ । यस जातिको एउटा समूह मकवानपुर जिल्लाको पश्चिम दक्षिणमा पर्ने हाँडीखोला गा.वि.स., वडा नं. ७, ट्वाङ्ग्राखोला किनार चुरेको जङ्गल छेउमा बसोबास गर्दैआएको छ । स्थानीय यिनै बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्य परम्परा प्रस्तुत अध्ययनको विषय हो ।

१.४ समस्याकथन

मकवानपुरका बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको अध्ययन नै प्रस्तुत अध्ययनपत्रको मूल समस्या हो । यस अध्ययनका मूलभूत समस्याहरू यसप्रकार छन् :

- (क) मकवानपुर जिल्लाका बनकरिया जातिको जातिगत पहिचान कस्तो छ ?
 - (ख) स्थानीय बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकगीत, लोककथा, गाउँखाने कथा र उखान एवम् टुक्काहरू के-कसरी वर्गीकरण गर्न सकिन्छ ?
 - (ग) वर्गीकृत लोकसाहित्यको अध्ययनबाट प्राप्त निचोड के हो ?
- उपर्युक्त समस्याहरूको अध्ययन र समाधानमा प्रस्तुत अध्ययनपत्र केन्द्रित छ ।

१.५ अध्ययनको उद्देश्य

मकवानपुरका बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको अध्ययन यस अध्ययनपत्रको मूल उद्देश्य हो । यस अध्ययनका निम्नलिखित उद्देश्यहरू रहेका छन् :

- (क) मकवानपुर जिल्लाका बनकरिया जातिको जातिगत पहिचान गराउनु,
- (ख) अध्ययनक्षेत्रका बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको स्वरूप पहिचान गर्नु,
- (ग) बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यका विधाहरूको वर्गीकरण गर्नु,
- (घ) वर्गीकृत लोकसाहित्यिक विधाहरूको अध्ययन गर्नु ।

१.६ पूर्वकार्यको समीक्षा

बनकरिया जातिका बारेमा कान्तिपुर राष्ट्रिय दैनिक र हेटौँडा सन्देश दैनिकमा सामान्य लेख प्रकाशन भएका छन् । कान्तिपुर राष्ट्रिय दैनिकका प्रताप बिष्ट र हेटौँडा सन्देशका भानुभक्त आचार्यले बनकरियाको आर्थिक अवस्थालाई मात्र उजागर गरेका छन् । यसैगरी चुनबहादुर गुरुडले व्यथा बनकरियाको (आदिवासी जनजाति बुलेटिन, आदिवासी जनजाति उत्थान राष्ट्रिय प्रतिष्ठान) अङ्क ५, असार (२०६१) मा बनकरिया जातिको आर्थिक, सामाजिक अवस्थाको बारेमा उल्लेख गरेका छन् । धनबहादुर मोक्तानले बनकरिया को हुन् ? (२०६१) अनुसन्धानात्मक अप्रकाशित शोधपत्रमा बनकरियाको सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, धार्मिक र सांस्कृतिक आदि अवस्थाका बारेमा उल्लेख गरेका छन् । ज्योत्स्ना राईले *Socio-cultural and Economic Situational of BANKARIYA's thesis* (२०६२) मा पनि स्थानीय बनकरिया जातिको आर्थिक, सामाजिक र सांस्कृतिक पक्षलाई मात्र समेटिएको छ ।

उपर्युक्त पूर्वकार्यलाई आधार मान्दा स्थानीय बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको अध्ययन हालसम्म भएको देखिँदैन । तसर्थ प्रस्तुत अध्ययनका समस्याहरूसित सम्बन्धित समस्याको समाधानमा केन्द्रित भई बनकरिया जातिको लोकसाहित्यको अध्ययन गरिएको छ ।

१.७ अध्ययनको औचित्य र महत्त्व

स्थानीय बनकरिया जाति अति पिछ्छडिएको आदिवासी जाति हो । प्रस्तुत अध्ययनबाट स्थानीय बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको जानकारी भएको छ । यस जानकारीबाट स्थानीय यो जातिको लोकसाहित्यको जगेर्ना गर्न मद्दत पुग्नेछ । अत्यन्तै अल्पसङ्ख्यामा रहेको स्थानीय बनकरिया जातिका लोकभावनाहरूको पहिचानका निम्ति पनि बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको अध्ययनको आफैँमा महत्त्व छ ।

१.८ क्षेत्र र सीमा

मकवानपुर जिल्लाको हाँडीखोला गा.वि.स. प्रस्तुत अध्ययनको क्षेत्र हो । हाँडीखोला गा.वि.स.अन्तर्गत वडा नं. ७ मा बसोबास गर्ने बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको सङ्कलन, वर्गीकरण र अध्ययन यस अध्ययनको सीमा रहेको छ ।

१.९ सामग्रीसङ्कलन र अध्ययनविधि

१.९.१ क्षेत्र अध्ययन

प्रस्तुत अध्ययन मूलतः क्षेत्र अध्ययनसित सम्बन्धित छ । अध्ययनक्षेत्रको स्थलगत भ्रमण गरी स्थानीय बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यिक अभिव्यक्तिहरूको प्रत्यक्ष अवलोकन, रेकर्डिङ र टिपोटका आधारमा मूल सामग्रीसङ्कलन गरिएको छ । मूल सामग्रीसङ्कलनसम्म पुग्न स्थानीय सूचक, सहयोगी तथा लोकसाहित्य एवम् स्थानीय सांस्कृतिक तहमा भिजेका लोकप्रिय व्यक्तिहरूलाई आधार बनाइएको छ । प्राप्त लोकगीत, लोककथा, उखान एवम् टुककालाई नेपालीकरण गर्न दोभाष मूलवक्ताको समेत छनौट गरी सामग्रीसङ्कलन गरिएको छ । स्थानीय क्षेत्रमा नै रहेर प्राथमिक मूल सामग्रीको अवलोकन र सम्पादन गरिएको छ । जातीय भाषामा प्राप्त सामग्रीको सम्पादनमा मौलिकता नबिगार्ने गरी नेपालीमा अनुवाद गरिएको छ । सङ्कलित सामग्रीलाई पुस्तकालय अध्ययनका आधारमा वर्गीकरणलाई मापदण्ड बनाएर व्यवस्थित अध्ययन गरिएको छ ।

१.१० अध्ययनको रूपरेखा

यस अध्ययनपत्रको रूपरेखा निम्न रहेको छ :

पहिलो परिच्छेद : **अध्ययनपरिचय**

अध्ययनपरिचयअन्तर्गत अध्ययनशीर्षक, अध्ययनप्रयोजन, विषयपरिचय, अध्ययनको उद्देश्य, पूर्वकार्यको समीक्षा, अध्ययनको औचित्य र अध्ययनविधि रहेको छ ।

- दोस्रो परिच्छेद : **मकवानपुर जिल्लाको हाँडीखोला गा.वि.स.का बनकरिया जातिको परिचय**
 यसअन्तर्गत बनकरिया जातिको अवस्थिति, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक जनसाङ्ख्यिक तथा लोकसाहित्यिक अवस्थाको सामान्य परिचय प्रस्तुत गरिएको छ ।
- तेस्रो परिच्छेद : **मकवानपुरका बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको वर्गीकरण**
 लोकसाहित्यको सैद्धान्तिक परिचय र मकवानपुरका बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यिक विधाहरूको वर्गीकरण गरिएको छ ।
- चौथो परिच्छेद : **बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको अध्ययन**
 स्थानीय बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकगीत, लोककथा, गाउँखाने कथा, उखान एवम् टुक्काको अध्ययन गरिएको छ ।
- पाँचौँ परिच्छेद : **उपसंहार**
 यस परिच्छेदअन्तर्गत अध्ययनको उपसंहार रहेको छ ।

यसरी नै सन्दर्भग्रन्थसूची र परिशिष्टसमेत समावेश गरेर सर्वाङ्गपूर्ण अध्ययनपत्र तयार गरिएको छ ।

दोस्रो परिच्छेद

बनकरिया जातिको जातिगत परिचय

२.१ परिचय

मकवानपुर जिल्लाको पश्चिमदक्षिण क्षेत्रमा पर्ने हाँडीखोला गा.वि.स.को दक्षिणी भाग चुरे पहाडको घाँचमा करिब ७०/८० वर्षअघिदेखि बसोबास गर्दैआएको र हाल १५/२० वर्षदेखि हाँडीखोला गा.वि.स., वडा नं. ७ ट्वाङ्गाखोला किनारमा अस्थायी रूपमा बसोबास गरिरहेका बनकरिया जातिलाई नेपाल सरकारले २०५६ सालदेखि आदिवासी जनजातिको सूचीमा राखेको छ । जीवन निर्वाहका लागि बनमा आश्रित हुने र वनमै आफ्नो जीवन व्यतीत गर्ने भएको हुँदा नै यस जातिलाई बनकरिया भनिएको हो ।

बनकरियाको पुख्र्यौली पहिचानबारेमा भगवान् श्रीरामका पुत्र लवका सन्तान लवहरिहरू कालान्तरमा चेपाङ र कुशका सन्तान कुशहरि कालान्तरमा कुसुन्डा जाति बनेका हुन् ।^१ एक किंवदन्तीअनुसार सत्ययुगमा एक कुमारी केटीले बच्चा जन्माइन् । आफ्नो कलङ्क मेट्न बच्चालाई जङ्गलमा लगेर दुङ्गाले थिचेर छाडियो । बच्चा बाँचेर प्रकृतिको काखमा हुकँदै गयो । दुङ्गाले चेपिएको त्यही बालकका सन्तान नै चेपाङ हुन् । तिनै चेपाङकै एउटा समूह बनकरियाको नामबाट चिनिन थालेको हो ।^२ जङ्गलमै रहेर जीविका चलाउने र लामो समयसम्म अन्य समाजबाट अलग रहेका कारण यिनीहरू बनकरियाका नामले चिनिन थाले र त्यही नाम पछि जातिमा परिणत भयो ।

२.२ सामाजिक अवस्था

बनकरिया जातिको सामाजिक अवस्थाको अध्ययन गर्दा १३ घरपरिवारमा ६६ जनाको सङ्ख्यामा रहेका छन् । सामान्य खरका छाना रहेका घरहरूमा जि.वि.स. मकवानपुरको प्रत्येक घरमा एउटा सौर्यबत्ती जडान गरिएको छ । सामान्यतया खेतीपातीमा नै निर्भर यो

१ धनबहादुर मोक्तान, **बनकरियाहरू को हुन् ? एक अनुसन्धान**, (मकवानपुर : समाज जागरण केन्द्र नेपाल, २०६१), पृ. १८ ।

२ ऐजन ।

जाति ब्राह्मण, क्षेत्री समुदायसँग कामकाजमा सामेल भएको पाइन्छ । सोभो र मिलनसार प्रकृतिको देखिने यो जातिले खेतीपाती, पशुपालना गर्ने, करिलो, तरुल, भ्याकुर खनेर जीविका गर्ने गरेको छ ।

२.३ भाषा

बनकरिया र चेपाङ जातिको कथ्यभाषामा प्रायः समानता छ । भोटबर्मेली भाषा परिवारअन्तर्गत पर्ने चेपाङ मातृभाषा बनकरियाको पनि मातृभाषा रहेको छ । चेपाङ र बनकरिया जातिमा प्रचलित केही शब्दहरूलाई यहाँ उल्लेख गरिएको छ :

| नेपाली | बनकरिया | चेपाङ |
|---------------|----------|----------|
| हजुरबुवा/बाजे | बाजे | बाजे |
| आमा | आमा | आमा |
| छोरा | चो | चो |
| छोरी | चोद्यडे | चोद्येड |
| फुपाजु | पुसैं | पुसैं |
| जेठान | जेठानदाइ | जेठानदाइ |

यसरी के देखिन्छ भने बनकरिया र चेपाङ जातिको भाषामा भिन्नता छैन । उनीहरू घरपरिवारमा एकआपसमा आफ्नो मातृभाषामा कुराकानी गर्छन् भने नेपाली भाषीहरूसँग नेपाली भाषामै कुराकानी गर्छन् ।

२.४ धर्मसंस्कृति

बनकरियाहरू र चेपाङहरूको धर्मसंस्कृतिमा पनि प्रायः समानता छ । घरको कुलदेवतालाई देवली मनाउने भनिन्छ । यिनीहरू असोज महिनामा एकरातको पूजाआजा गर्दछन् । पूजा गर्दा कुलदेवताको रूपमा ढुङ्गालाई पूजा गर्ने चलन छ । त्यस ढुङ्गालाई बाबुबाजेकै पालादेखि सुरक्षित राखिएको हुन्छ । पूजा गर्दा घरमुलीले कपाल खौरेर नुहाइधुवाइ गरी सरसफाइका साथ केही नखाई देवली पूजा गर्ने प्रचलन गरेको छ । भाले काटेर कुलदेवतालाई भोग चढाएपछि वर्षभरि आफ्नो कुलमा कुनै अनिष्ट नहुने र खानलाउन तथडा सुखसमृद्धि हुन्छ भन्ने जनविश्वास रहेको छ । दुर्गाभगवतीको पूजाआजा गर्ने परम्पराले बनकरियाहरू देवीदेवतामा नै विश्वास राख्छन् भन्ने पुष्टि हुन्छ । यस्तो पूजामा कुनै देवीदेवताको मूर्ति, फोटो भने राखेको हुँदैन ।

३ हाँडीखोला-७ निवासी छोवे बनकरियासँग गरिएको प्रत्यक्ष वार्तालापअनुसार ।

यस जातिमा मागी तथा चोरी विवाहको प्रचलन छ । बाडराडे, रूपाकोटे, बोशो, कालीकोटे, बाह्रब्रंशे, पचमैया, कागिला र जारुडे गरी सातओटा थरहरू रहेको र आफ्नो थरबाहेकसँग विवाह हुने गरेको छ ।^४ यिनीहरूको संस्कारमा बच्चा जन्मेको तीन दिनदेखि एघार दिनभित्रमा आमाबाबु वा घरमुलीले सुत्केरी र बच्चालाई नुहाई सुनपानी, तीतेपाती र गाईको गहुँतले चोखियो – चोखियो – चोखियो भनेर तीनपटक छर्केपछि चोखिने भन्ने जनविश्वास छ । तीनवर्षदेखि सातवर्षभित्रमा मामाले कपाल काटेर छेवर गर्ने परम्परा रहेको छ ।^५ नाम राख्ने सम्बन्धमा भने जन्मबार अथवा स्थानलाई आधार मान्ने चलन छ । धोबे बनकरियाको नाम धोबीखोला बगरमा जन्मेको आधारमा राखिएको कुरा स्वयम् धोबेले बताएका छन् । हिजोआज भने जान्ने भएपछि केटाकेटीहरूले सामान्य चलनचल्तीको नाम राख्ने गरेको पाइन्छ ।

२.५ शैक्षिक तथा आर्थिक अवस्था

केही समयअघिसम्म शिक्षामा पटककै ध्यान नदिने यस जातिले आजभोलि भने आफ्ना बालबालिकाहरूलाई विद्यालय पठाउन थालेको पाइन्छ । हाल स्थानीय बनकरिया जातिका १३ जना बालबालिकाहरू कक्षा एकदेखि कक्षा ६ सम्म स्थानीय पशुपतिनाथ मा.वि.स.मा अध्ययन गरिरहेका छन् । आफूले नपढेका कारण दुःख पाएकोले आफ्ना बालबच्चालाई भने शिक्षा दिनुपर्छ भन्ने सोच उनीहरूमा पाइन्छ । ३६ जनाको सङ्ख्यामा प्रौढहरू पनि प्लान नेपाल मकवानपुरले सञ्चालन गरेको प्रौढकक्षामा स्थानीय स्वयम्सेवी पार्वती ढकालसँग कखरा सिकिरहेका छन् ।

खरका स-साना भुपडी भए पनि जि.वि.स. मकवानपुरले १३ ओटै घरमा सौर्यबत्तीको व्यवस्था गरिदिएको छ । सामान्य खेतीपातीमा पनि लागेका बनकरियालाई वर्षभरि खान पुग्ने अन्न भने उब्जाउन सकेका छैनन् । नेपाल सरकारको लोपोन्मुख जनजातिको उत्थानको घोषणाअनुसार प्रतिव्यक्ति प्रतिमहिना रु. ५००/- जीवननिर्वाह भत्ता गा.वि.स.मार्फत् वितरण हुन थालेपछि भने आर्थिक अवस्थामा केही राहत मिलेको कुरा उनीहरूले बताएका छन् । पुरुषले सामान्य पेन्ट, सर्ट, भोटो, कछाड, टोपी उमेरअनुसार लगाउँछन् भने महिलाले चोलो, गुन्यूस पटुका, म्याक्सी, कुर्तासुरुवाल, ढुङ्ग्री, बुलाकी, बाला, पोते आदि लगाउने गर्छन् ।

२.६ निष्कर्ष

बनकरिया जाति चेपाङकै एक हाँगा वा प्रजातिका रूपमा रहेको छ । यी दुवै जातिको भाषा र संस्कृतिमा समानता छ ।

^४ धनबहादुर मोक्तान, बनकरियाहरू को हुन् ? एक अनुसन्धान, पूर्ववत्, पृ. ३३ ।

^५ ऐजन ।

शैक्षिक स्थिति ज्यादै कमजोर देखिएको छ । आफ्ना बालबालिकाहरूलाई विद्यालयमा पढ्न पठाउने चेतना बढ्न थालेको छ । प्रौढहरूमा पनि प्रौढशिक्षातर्फ आकर्षण बढेको छ ।

आर्थिक अवस्था सन्तोषजनक नभए पनि राज्यबाट प्राप्त रकमले केही राहत मिलेको छ । सम्बन्धित जि.वि.स. र गा.वि.स.ले पनि राहतका रूपमा केही सहयोग पुऱ्याएका छन् ।

बनकरिया लोकसाहित्य प्रायः नेपाली भाषामै प्रचलित छ । नेपाली भाषाभाषीसँगको दैनिक सम्पर्क र विशेषगरी युवायुवतीले नेपाली भाषालाई नै बोलचालको भाषा बनाएका कारण लोकसाहित्यमा पनि त्यसको प्रभाव पर्नु स्वाभाविक छ ।

तेस्रो परिच्छेद

मकवानपुरका बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको वर्गीकरण

३.१ परिचय

लोकको साहित्यलाई लोकसाहित्य भनिन्छ । यसको सिर्जना शिष्ट समुदायबाट नभई सामान्य जनसमुदाय वा लोकबाट गरिन्छ । जनसाधारणका बीचमा प्रचलित एवम् लोकप्रिय भएर रहेको लोकसिर्जनाले सामान्य जनसमुदायको जीवनका सुखदुःखात्मक प्रत्येक पाटालाई छोएको हुन्छ ।

लोकज्ञान वा लोकभावनामा आधारित श्रुतिपरम्पराबाट प्राप्त व्यक्तिविशेषको नभई अपठितहरूबाट सामूहिक ढङ्गले लोकगीत, लोककविता, लोकगाथा/लोककाव्य, लोककथा, लोकनाटक, गाउँखाने कथा, उखान, टुक्का, मन्त्र आदि विधाका रूपमा अभिव्यक्त हुने मौखिक भाषिक संरचनालाई लोकसाहित्य भनिन्छ ।^१

मकवानपुर जिल्लाको हाँडीखोला गा.वि.स., वडा नं. ७ स्थित स्थानीय बनकरिया समुदायमा पनि आफ्नै प्रकारका लोकभाकाहरू छन् । अल्पसङ्ख्यक तथा अन्य जाति र नेपाली भाषाभाषीसँगको बढी संसर्गले गर्दा बनकरिया जातिले आफ्नो लोकभाकालाई आफ्नै भाषामा सुरक्षित राख्न सकेको छैन । बनकरिया जातिको आफ्नै मातृभाषा बोल्नेको सङ्ख्या न्यून रहेको हुँदा पनि यो जातिमा नेपाली भाषाको प्रभाव बढी देखिएको छ । लोकसाहित्यका विधाहरूमा लोकगीत, लोककथा, गाउँखाने कथा, उखानटुक्का आदि केही उनीहरूका आफ्नै मातृभाषामा त केही नेपाली भाषामा प्रचलित रहेको पाइन्छ । लोकगाथा र लोकनाटकजस्ता विधाहरू भने यस जातिमा प्रचलन मारहेको पाइएन ।

१ मोहनराज शर्मा र खगेन्द्रप्रसाद लुइटेल्, **लोकवार्ता विज्ञान र लोकसाहित्य**, (काठमाडौँ : विद्यार्थी पुस्तक भण्डार, २०६३), पृ. १५ ।

३.२ लोकसाहित्यको विधागत वर्गीकरण

विधाको अर्थ प्रकार हो । लोकसाहित्यका सन्दर्भमा यसले लोकसाहित्यका प्रकारहरूलाई बुझाउँछ । साहित्यमा प्रचलित विधासिद्धान्तअनुसार लोकसाहित्यको विधा छुट्याएर वर्गीकरण गर्नुपर्ने स्थिति छ । विधा वर्गीकरण गर्ने विभिन्न साहित्यशास्त्रीय आधारहरू छन् ।^२ लोकसाहित्यको विधा छुट्याउन पनि साहित्यकै विधा वर्गीकरणका आधारहरूमध्ये माध्यम, प्रस्तुति, श्रेणी, आकार, प्रकार आदिलाई आधार मानेर निम्न विधामा वर्गीकरण गरिएको पाइन्छ ।

(क) लोकगीत/लोकपद्य

सबैभन्दा बढी सङ्ख्यामा रचिने, गाइने लोकसाहित्यको प्रमुख र लोकप्रिय विधा लोकगीत हो । जीवनका सुखदुःख, हर्ष-विस्मात आदिलाई लयात्मक रूपमा आफ्ना मनका भावना व्यक्त गर्न सक्ने गुण लोकगीतमा हुन्छ । यो जेठो विधा गाउँबेसी, उकालीओराली, सहर, मैदान जहाँ पनि छ र रहिरहने छ । यस विधाअन्तर्गत झ्याउरे, सङ्गिनी, देउडा, देउसी, भैलो, बालुन, सवाई, ऋतुगीत, बाह्रमासा, संस्कारगीत आदि पर्दछन् ।

(ख) लोककथा

लोककथा लोकसाहित्यको दोस्रो प्रमुख विधा मानिन्छ । कथाको विशेषता भनेकै आख्यानात्मकता हो । घटना वा चरित्रका विशेषताहरूलाई वर्णन गरी श्रोतालाई मुग्ध पार्ने काम गरिन्छ । लोककथाहरू प्रायः काल्पनिक हुन्छन् । लोककथामा लौकिक, अलौकिक, भूतप्रेत, जादू आदि विषयवस्तुलाई समेटिएको हुन्छ । एकादेशमा, उहिल्यैजस्ता शब्दबाट थालनी गरी सुन्नेलाई सुनको माला भन्नेलाई फूलको माला भन्दै लोककथाको अन्त्य गरिन्छ । यसले श्रोतामा मनोरञ्जन दिनुका साथै उत्साह, साहसजस्ता भाव उत्पन्न गराउँछ ।

(ग) लोकगाथा

नेपालीमा गाथा, अङ्ग्रेजीमा Ballad शब्दले चिनिने यो आख्यानात्मक गीत हो । यो देवदेवी, वीरपुरुष, सामाजिक घटना आदिमा आधारित हुन्छ । यो पनि लोकसाहित्यको प्राचीन विधा हो । कथातत्त्व वा आख्यानको दृष्टिले लोकगीतका नजिक देखिने विधा नै लोकगाथा हो । यसअन्तर्गत भोटको

लडाइँको सवाइ, राजारानी राउतको भारत, सामाजिक तथा वीरगाथाहरू यस विधाअन्तर्गत पर्दछन् । यसबाट तत्कालीन समाजको यथार्थ र मनोरञ्जन प्राप्त गर्न सकिन्छ ।

(घ) लोकनाटक

गीत, सङ्गीत र नृत्य तीन तत्त्वहरूको समष्टि रूप नै लोकनाटक हो । लोकनाटकअन्तर्गत गीत, नाच र सङ्गीत भएका सानातिना घटना संवादयुक्त कथावस्तु आदि पर्दछन् । घाटुनाच, सोरठीनाच, चाँचरी, गाईजात्रा, धामीनाच, मारुनीनाथ आदि लोकनाटकअन्तर्गत पर्दछन् ।

(ङ) उखान/टुक्का

पूर्वाहरूको लामो अनुभवबाट खारिएका मार्मिक अभिव्यक्ति नै उखान हुन् । पहिला उखानको स्रोत उपाख्यानबाट भएको मानिन्थ्यो तर आजभोलि यसलाई लोकोक्ति (लोकको भनाइ) को नजिक भएको मानिन्छ । खारिएका लोकविचारका निचोडका रूपमा देखिने छोटो, मीठा, तीव्र, सम्प्रेषणीय वाक्यांश नै उखान हुन् । यी समाजका सम्पत्ति एक पिँढीपछि अर्को पिँढीका साथ हस्तान्तरित हुँदै जान्छन् । सूत्रात्मक, दृष्टान्तमूलक, सारगत, अलङ्कारयुक्त, चोटिलो, प्रभावकारी भनाइ जसले बेलाबखत आफ्नो अर्थ छाडेर लाक्षणिक वा विशिष्ट अर्थ बहन गर्दछ, त्यो नै उखान/टुक्का हो ।

उखानलाई आहान पनि भनिन्छ । आहान शब्दको व्युत्पत्ति आख्यानबाट भएको हो ।^३

(च) गाउँखाने कथा

प्रश्नोत्तर शैलीमा प्रस्तुत हुने यो गाउँखाने कथा लोकसमाजमा बौद्धिक अभिव्यक्तिका रूपमा चिनिन्छ । प्रश्न सोझा उत्तर दिन नसकेमा उत्तरदाताले कुनै गाउँ दिनुपर्ने हुन्छ । त्यसमा भएका राम्राराम्रा कुराजति सबै प्रश्नकर्तालाई र नराम्राजति सबै उत्तरदातालाई दिइन्छ । फुर्सदको समयको सदुपयोग गर्ने, बुद्धिबर्धक विधाका रूपमा गाउँखाने कथालाई लिइन्छ । 'हुन पनि हो, छन् पनि छ, खोजेर पनि पाइँदैन, हामी कसैलाई चाहिँदैन – के हो ?' (उत्तर – भुइँचालो) जस्ता दिमाग लगाउनुपर्ने गाउँखाने कथाहरू बुद्धिबर्धक तथा फुर्सदको कटनी दुवै हिसाबले महत्त्वपूर्ण छन् ।

३.३ बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको विधागत वर्गीकरण

मकवानपुर जिल्लाको हाँडीखोला गा.वि.स.-७, ट्वाङ्ग्राखोला किनारमा बसोबास गर्दै आइरहेका बनकरिया जातिले पनि आफ्ना मनका भावनाहरूलाई लोकभाकामार्फत् अभिव्यक्त गर्ने गरेको पाइन्छ । स्थानीय बनकरिया जातिमा लोकसाहित्यका सबैखाले विधाको प्रचलन नरहे पनि लोकगीत, लोकथा, उखानटुक्का, गाउँखाने कथा भन्ने र सुन्ने गरेको पाइन्छ । आफ्नो छुट्टै मातृभाषा रहेको भए तापनि नेपाली भाषीसँगको दिनचर्या तथा नेपाली भाषालाई नै मातृभाषा बनाएका कारण बनकरियाको आफ्नै जातीय भाषामा भने लोकसाहित्यको प्रचलन खास पाइँदैन ।

लोकगीतअन्तर्गत वनमा काँडा छ, ठाडोखोला, फूलमायाको गाउँ नेपाली भाषामा गाइन्छन् भने अघि जाऊँ सानी कान्छी, भोर्लाको पातमा, मलाई छोडी कहाँ गयो ? न्वागीगीत र आशीर्वादमन्त्र स्थानीय बनकरियाको मातृभाषामा नै गाइएको पाइन्छ ।

लोककथाअन्तर्गत राजाका सातभाइ छोरा, भ्यागुताले हात्ती निलेको कथा, टुहुरी छोरी, राजाको आयु, राजाको छोरा आदि कथाहरू नेपाली भाषामा नै भन्ने प्रचलन पाइन्छ भने भ्यान्जीबेला (टुहुरो), मान्ता र चिड्लान (मान्छे र बनमान्छे), वाको माइत (कुखुराको माइत) लगायतका लोककथाहरू स्थानीय बनकरियाको मातृभाषामा भन्ने गरेको पाइन्छ ।

गाउँखाने कथाहरू पनि नेपाली भाषामा प्रचलित कथालाई नै स्थानीय बनकरिया जातिको मातृभाषामा भन्ने गरेको पाइन्छ । युवायुवतीहरूले भने नेपाली भाषामै गाउँखाने कथा भन्ने गर्दछन् ।

उखानटुक्का पनि कतिपय नेपाली भाषापमा प्रचलितलाई मातृभाषामा प्रयोग गर्ने गरेको पाइन्छ ।

३.३.१ बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकगीतको वर्गीकरण

स्थानीय बनकरिया जातिको आफ्नै मातृभाषा भए तापनि नयाँ पुस्ताका बीच सम्पर्क भाषा नेपाली नै भएको हुँदा प्रायः बूढापाकाहरूले पनि नेपाली भाषालाई नै अभिव्यक्तिको माध्यम बनाउँदै आएका छन् । यस जातिमा प्रचलित र हाल प्राप्त आठओटा लोकगीतहरूमध्ये तीनओटा नेपाली भाषामा र पाँचओटा बनकरियाको आफ्नै मातृभाषामा छन् । यी गीतहरूलाई यहाँ उमेर, सहभागिता, आकार, विषय (भाव), प्रस्तुति र समयका आधारमा वर्गीकरण गरिएको छ ।^४

४ ऐजन, पृ. ८० ।

(क) उमेरका आधारमा

- (अ) युवागीत – वनमा काँडा छ, ठाडो खोला, अघि जाऊँ सानी कान्छी, फूलमयाको गाउँ, मलाई छोडी कहाँ गयो ? भोर्लाको पातमा
- (आ) प्रौढगीत – न्वागीगीत, आशीर्वादमन्त्र

(ख) सहभागिताका आधारमा

- (अ) एकलगीत – वनमा काँडा छ, ठाडो खोला, फूलमयाको गाउँ, मलाई छोडी कहाँ गयो ? आशीर्वादमन्त्र, भोर्लाको पातमा
- (आ) दोहोरी गीत – अघि जाऊँ सानी कान्छी
- (इ) सामूहिक गीत – न्वागीगीत

(ग) प्रस्तुतिका आधारमा

- (अ) कण्ठ्यगीत – वनमा काँडा छ, ठाडो खोला, फूलमयाको गाउँ, मलाई छोडी कहाँ गयो ?, अघि जाऊँ सानी कान्छी, आशीर्वादमन्त्र, भोर्लाको पातमा
- (आ) नृत्य/वाद्यगीत – न्वागीगीत

(घ) समयका आधारमा

- (अ) सामयिक गीत – न्वागीगीत, आशीर्वादमन्त्र
- (आ) सदाकालीक गीत – वनमा काँडा छ, ठाडो खोला, फूलमयाको गाउँ, मलाई छोडी कहाँ गयो ?, अघि जाऊँ सानी कान्छी, भोर्लाको पातमा

(ङ) विषयका आधारमा

- (अ) प्रेम विषयक – वनमा काँडा छ, अघि जाऊँ सानी कान्छी, मलाई छोडी कहाँ गयो ?
- (आ) परिवेशमूलक – फूलमयाको गाउँ
- (इ) गरिबी – ठाडो खोला, भोर्लाको पातमा

- (ई) पर्वविषयक – न्वागीगीत
 (उ) आशीर्वादमूलक – आशीर्वादमन्त्र

३.३.२ बनकरिया जातिमा प्रचलित लोककथाको वर्गीकरण

स्थानीय बनकरिया जातिमा हाल प्रचलित र प्राप्त आठओटा लोककथाहरूमध्ये पाँचओटा कथाहरू नेपाली भाषामा र तीनओटा कथाहरू बनकरियाको आफ्नै मातृभाषामा छन् । यी कथाहरूलाई यहाँ शिल्पविधान, विषयवस्तु, उद्देश्य, आकार, दृष्टिबिन्दु, परिवेशका आधारमा वर्गीकरण गरिएको छ* :

(क) शिल्पविधानका आधारमा

- (अ) घटनाप्रधान – भ्यागुताले हात्ती निलेको, मान्छे र वनमान्छे, राजाको छोरा
 (आ) चरित्रप्रधान – राजाका सातभाइ छोरा, कुखुराको माइत, टुहुरी छोरी, राजाको आयु, टुहुरो

(ख) विषयवस्तुका आधारमा

- (अ) सामाजिक – टुहुरो, राजाका सातभाइ छोरा, राजाको आयु, टुहुरी छोरी
 (आ) प्राकृतिक – भ्यागुताले हात्ती निलेको, मान्छे र वनमान्छे
 (इ) काल्पनिक – कुखुराको माइत, राजाको छोरा

(ग) उद्देश्यका आधारमा

- (अ) मनोरञ्जनप्रधान – भ्यागुताले हात्ती निलेको, मान्छे र वनमान्छे
 (आ) नीतिप्रधान – टुहुरो, राजाका सातभाइ छोरा, राजाको आयु, टुहुरी छोरी, कुखुराको माइत, राजाको छोरा

(घ) दृष्टिबिन्दुका आधारमा

- (अ) तृतीयपुरुष दृष्टिबिन्दु – भ्यागुताले हात्ती निलेको, मान्छे र वनमान्छे, टुहुरो, राजाका सातभाइ छोरा, राजाको आयु, टुहुरी छोरी, कुखुराको माइत, राजाको छोरा ।

(ड) आकारका आधारमा

(अ) लघुकथा – भ्यागुताले हात्ती निलेको, टुहुरी छोरी, कुखुराको माइत, मान्छे र वनमान्छे, राजाका सातभाइ छोरा ।

राजाको आयु, राजाको छोरा, टुहुरो ।

३.३.३ बनकरिया जातिमा प्रचलित गाउँखाने कथाको वर्गीकरण

स्थानीय बनकरिया जातिमा हाल प्रचलित र प्राप्त गाउँखाने कथाहरू केही नेपाली भाषामा र केही स्थानीय बनकरिया जातिको आफ्नै मातृभाषामा छन् । यी कथाहरूलाई यहाँ माध्यम, विषयवस्तु, संरचनाका आधारमा वर्गीकरण गरिएको छः :

(क) माध्यमका आधारमा

(अ) गद्यात्मक – एउटा घरका दुईटा ढोका, पारि भित्तामा मृगका पाइला, पाँचभाइको साभे थाल, काटिन्छ, पोलिन्छ तर पाकदैन, बत्तीस सिकारी बीचमा सिकार, नीलो पोखरीमा सेता फूल

(आ) पद्यात्मक – पानी आउँ कुवा होइन
 प्वाल छ भित्र देखिँदैन – आँखा
 आयो आयो देखिँदैन
 गयो गयो भेटिँदैन – भूकम्प
 आकाशकी परी पातालमा भर्री
 सूर्यलाई देखा भुतुकै मरी – शीत
 हात न खुट्टा, उखेल्लु बुट्टा – पहिलो
 भर्री परे ठूली हुन्छे, भर्री मरे आफू मर्छे – खोला

(ख) विषयवस्तुका आधारमा

(अ) शरीरसम्बन्धी – एउटा घरका दुईओटा ढोका – नाक
 पारि भित्तामा मृगको पाइलो – नाइटो
 पाँचभाइको साभे थाल – हात
 बत्तीस सिकारी बीचमा सिकार – जिब्रो
 पानी आउँछ कुवा होइन
 प्वाल छ भित्र देखिँदैन – आँखा

- (आ) वस्तुसम्बन्धी – हात्ती छिन्चो पुच्छर अङ्क्यो – सियो धागो
 सुरिलो रूखको एउटै पात – पन्यौ
 जान्छ जान्छ पानीसँग डराउँछ – जुत्ता
 एकमुठी खर घुमाउने घर – छाता
 खै खै बाजे म अधि जाऊँ – लौरो
 कान तान्दा मुख बाउँछ – थैली
- (इ) प्राणीसम्बन्धी – अगाडि शङ्ख पछाडि पङ्ख – कुकुर
 चाकले टेक्छ मुखले खान्छ – जुका
 नखाऊँ भने दिनभरिको सिकार
 खाऊँ भने कान्छा बाउको अनुहार – बाँदर
 कालो वनमा सानासाना नानी – जुम्रा
- (ई) प्रकृतिसम्बन्धी – आयोआयो देखिँदैन
 गयोगयो भेटिँदैन – भूकम्प
 जताजता आफू उतैउतै बाबु – छायाँ
 नीलो पोखरीमा सेता फूल – तारा
 हात न खुट्टा उखेल्छ बुट्टा – पहिरो

(ग) **संरचनाका आधारमा**

- (अ) सरल वाक्यात्मक – नीलो पोखरीमा सेता फूल – तारा
 पारि भित्तामा मृगको पाइला – नाइटो
 एउटा घरका दुईटा ढोका – नाक
 पाँचभाइको साभे थाल – हात
 भुँडे गोरुको एउटा सिङ – जाँतो
- (आ) जटिल वाक्यात्मक – लामो पुच्छर छ बाँदर होइन,
 चार खुट्टा छन् जनावर होइन – छेपारो
 अगाडि शङ्ख पछाडि पङ्ख – कुकुर
 जताजता आफू उतैउतै बाबु – छायाँ
 आकाशकी परी पातालमा भर्री
 सूर्यलाई देख्दा भुतुककै मरी – शीत

३.३.४ बनकरिया जातिमा प्रचलित उखान/टुक्काको वर्गीकरण

स्थानीय बनकरिया जातिमा हाल प्रचलित र प्राप्त उखान/टुक्काहरू केही नेपाली भाषामा र केही आफ्नै मातृभाषामा रहेका छन् । यिनीहरूलाई सामाजिक नीतिचेतना, ज्ञानविज्ञान, कृषिव्यवसाय, लोकविश्वास, इतिहास, प्रकृति, पशुपंक्षी आदि आधारमा वर्गीकरण गरिएको छ ।

(क) सामाजिक नीतिचेतना

लोग्नेस्वास्नीको भगडा परालको आगो
 आफू नमरी स्वर्ग देखिँदैन
 खाएसार कि लाइसार मरेपछि लम्पसार
 नाचन नजान्ने आँगन टेढो
 म ताक्छु मुडो बन्चरो ताक्छ घुँडो
 आयुको छोरालाई वायुले खाँदैन
 अर्ति र ओखती तीतो हुन्छ
 आफू भलो त जगतै भलो
 भाइ फुटे गंवार लुटे

(ख) कृषि व्यवसायसँग सम्बन्धित

अनिकालमा बीउ जोगाउनु हुलचालमा जिउ जोगाउनु
 अल्छी तिघो स्वादे जिब्रो
 आए आँप गए भटारो
 तोरीको फूल देखनु

(ग) लोकविश्वाससम्बन्धी

हुनेहार दैव नटार
 भाग्यको दाउ परीपरी आऊ
 आयुको छोरालाई वायुले खाँदैन
 आफू भलो त जगतै भलो
 अजिङ्गरको आहारा दैवले जुराउँछ

(घ) इतिहाससम्बन्धी

बूढा मरे भाषा सरे

(ड) प्रकृतिसँग सम्बन्धी

डाँडाको जून
 पुस फासफुस
 चन्द्रमा दाहिना भए ताराको के लाग्छ
 खोलाको गीत
 आए आँप गए भटारो
 अकबरी सुनलाई कसी लगाउनु पर्दैन

(च) पशुपक्षीसँग सम्बन्धित

अगुलटाले हानेको कुकुर बिजुली चम्किँदा तर्सिन्छ
 अजिङ्गरको आहारा दैवले जुराउँछ
 कागलाई बेल पाक्यो हर्ष न विस्मात
 बाँदरको हातमा नरिवल
 बाख्रीको पुच्छर
 बाँदरको घाउ
 छेपाराको उखान
 कुखुरे बैस

३.३.५ निष्कर्ष

स्थानीय बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्य हेर्दा हाल प्रचलित र प्राप्त भएका लोकगीत, लोककथा, गाउँखाने कथा र उखान/टुक्का रहेका छन् ।

लोकगीतलाई वर्गीकरण गर्दा उमेरसमूह, सहभागिता, प्रस्तुति, समय, विषय आदिलाई आधार मानिएको छ । प्राप्त आठओटा लोकगीतमा दुईओटा प्रौढ र छओटा युवागीत रहेका छन् । एउटा दोहोरी गीत छ भने एउटा सामूहिक र बाँकी छओटा एकल गीत छन् । मायाप्रेमसँग सम्बन्धित केही गीत छन् भने केही पार्विक गीत छन् । पर्व, आशीर्वाद, गरिबी, प्रेम आदि विविध विषयवस्तुमा आधारित गीतहरूको यस परिच्छेदमा वर्गीकरण गरिएको छ ।

यस जातिमा हाल प्रचलित आठओटा लोककथालाई वर्गीकरण गरिएको छ । तीनओटा कथा बनकरियाको आफ्नै मातृभाषामा छन् भने बाँकी पाँचओटा कथा नेपाली भाषामा छन् । यी कथाहरूलाई शिल्पविधान, विषयवस्तु, उद्देश्य, दृष्टिबिन्दु र आकारका आधारमा वर्गीकरण गरिएको छ । घटनाप्रधान, चरित्रप्रधान, सामाजिक, काल्पनिक, प्राकृतिक, मनोरञ्जनप्रधान, नीतिप्रधान, बाह्यदृष्टिबिन्दु र आकारगत दृष्टिले लघुकथाका रूपमा यी कथाहरू वर्गीकृत भएका छन् ।

बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको अर्को विधा गाउँखाने कथा पनि हो । हाल प्रचलित र प्राप्त केही गाउँखाने कथाहरूलाई यस परिच्छेदमा विभिन्न आधारमा वर्गीकरण गरिएको छ । सङ्कलित गाउँखाने कथाहरूलाई माध्यमका आधारमा गद्यात्मक र पद्यात्मक, विषयवस्तुका आधारमा शरीरसम्बन्धी, वस्तुसम्बन्धी, प्राणीसम्बन्धी र प्रकृतिसम्बन्धी, संरचनाका आधारमा सरल वाक्यात्मक र जटिल वाक्यात्मक रूपमा वर्गीकरण गरिएको छ । यी केही नेपाली भाषामा र केही आफ्नै मातृभाषामा प्राप्त छन् ।

बनकरिया जातिमा हाल प्रचलित र प्राप्त उखान/टुक्का केही नेपाली भाषामा र केही बनकरियाको आफ्नै मातृभाषामा छन् । प्राप्त उखान/टुक्कालाई सामाजिक नीतिचेतना, कृषि व्यवसाय, लोकविश्वास, इतिहास, प्रकृति र पशुपक्षीसँग सम्बन्धित रूपमा वर्गीकरण गरिएको छ । सङ्ख्यात्मक रूपले न्यून भए पनि प्रयोगका दृष्टिले यहाँ सङ्कलित उखानटुक्काहरू महत्त्वपूर्ण छन् ।

चौथो परिच्छेद

बनकरिया जातिमा प्रचलित

लोकसाहित्यको अध्ययन

४.१ लोकगीतको अध्ययन

स्थानीय बनकरिया जातिमा हाल प्रचलित र प्राप्त लोकगीत केही नेपाली भाषामा र केही बनकरियाको आफ्नै मातृभाषामा रहेका छन् । प्राप्त आठओटा गीतहरूलाई उमेरसमूह, सहभागिता, प्रस्तुति, समय र विषयका आधारमा अध्ययन तथा विश्लेषण गरिएको छ ।

४.१.१ वनमा काँडा छ

बनकरिया जातिमा प्रचलित *वनमा काँडा छ* युवागीत हो । युवायुवतीहरू मायाप्रीति लाउने सन्दर्भको भाव वा कथ्य अभिव्यक्त गर्ने क्रममा यो गीत गाउँछन् । यस गीतमा युवायुवतीको मनको अनुराग अभिव्यक्त भएको छ ।

सहभागिताको दृष्टिले यो एकल गीत हो । नितान्त वैयक्तिक अनुरागको प्रकटीकरण भएकाले यसमा गायक एकल रूपमा मात्र अभिव्यक्त हुनु स्वाभाविक छ । सम्बोध्य मनको नायक नायिकालाई लक्ष्य गरी त्यसप्रति उद्दीष्ट भएर त्यसप्रतिकोप अनुराग व्यक्त भएको हुँदा यसको गायनमा गायकको एकल सहभागिता हुनु स्वाभाविक छ ।

प्रस्तुतिका आधारमा यो कण्ठ्यगीत हो । यसमा कुनै वाद्यवादन, नृत्यको आवश्यकता महसुस हुँदैन । समयका दृष्टिले सदाकालीक यो गीत प्रेम विषयमा आधारित छ । प्रस्तुत गीतको कथ्य यस्तो रहेको छ :

तिमीसँग मैले माया लाउन सुर गरें तर तिम्रो घर कहाँ हो मलाई थाहा छैन ।
तिमीलाई पाउन पनि सजिलो छैन, बाटोमा धेरै काँडाहरू छन् र चुनौतीहरूको सामना गर्नुपर्ने हुन्छ ।
तिमी उता म यता, ज्यान टाढा भए पनि बिरानो नसम्भ किनभने माया धेरै गाढा छ ।

माया, तिमी नजिकमा आऊ । तिमीप्रति मेरो माया कति छ म त्यो केही व्यक्त गर्न सकूँला । पानी खाने निहुले तिमी गँगटे पँधेरामा आऊ तिमीबिना यो मन सारै अँधेरो भएको छ । तरुल खन्न जाने बहानामा हामी वनमा भेट हुन सक्यौँ, यही कुरा लिएर म तिमीसँग आएको छु । मायाप्रेमलाई कथ्य विषय बनाएर गायकको मनका रागहरू गीतमा अभिव्यक्त भएका छन् ।

४.१.२ ठाडो खोला^२

बनकरिया जातिमा प्रचलित *ठाडो खोला* युवागीत हो । प्रेमीप्रेमीकाबीच विछोड भएको र फेरि भेट होला या यसै जीवन बित्ला, माया लाउनेले छाडेर जान नहुने, बेला र मौकाले भेट भएको अब छुट्न नहुनेजस्ता युवायुवतीका मायाप्रेमका भावहरू अभिव्यक्त भएको प्रस्तुत गीत युवागीत हो ।

सहभागिताका दृष्टिले यो एकल गीत हो । यसमा नितान्त वैयक्तिक अनुराग व्यक्त भएको छ । गायक एकल रूपमा अभिव्यक्त हुने तथा सम्बेद्य मनको नायक नायिकालाई लक्ष्य गरी त्यसप्रतिको अनुराग अभिव्यक्त भएको छ ।

प्रस्तुतिका आधारमा यो कण्ठ्य गीत हो । कुनै वाद्यवादन/नृत्यको प्रस्तुति नभई मायाप्रीतिप्रतिको मनोभाव प्रकट गरिन्छ । समयका आधारमा सदाकालीक यो गीतमा गरिबी र अभाव पनि अभिव्यक्त भएको छ । प्रस्तुत गीतको कथ्य यस्तो रहेको छ :

गरिबहरू काम गर्छन् तर खान पाउँदैनन् गाई दुहे पनि ढुङ्ग्रोमा मोई नहुने, तीया र चौकाले पैसा मार्ने प्रसङ्गले जुवा र तासको खेललाई पनि सङ्केत गर्दछ । बेला/मौकाले भेट गराउने, माया लाउनेले छाडेर जान नहुने, गरिबको पक्षमा बोल्दिने कोही नहुनेजस्ता सुखदुःख, गरिबी, मायाप्रेम, खेलवाड, पशुपालन आदि विविध भावलाई समेटिएको प्रस्तुत गीत बनकरिया जातिमा प्रचलित गीत हो ।

४.१.३ फूलमयाको गाउँ^३

बनकरिया जातिमा प्रचलित *फूलमयाको गाउँ* गीतको मूल पाठ नेपाली भाषामा छ । प्रस्तुत गीत ९ र ११ वर्षका बालिकाले प्रस्तुत गरेको भए पनि युवायुवतीले गाएको नक्कल गरेका हुँदा यो गीत उमेरका आधारमा युवागीत हो । युवायुवतीले आफ्नो गाउँ कोल्टे परेको, विद्यालय जस्ताले छाएको, पढ्न रहर लागेको जस्ता मनका भावहरू अभिव्यक्त गरेका छन् ।

सहभागिताका आधारमा यो गीत एकल गीत हो । पढ्ने रहर, बाबुआमाको माया, विद्यालयको भौतिक अवस्था, सुसेलेर बोलाउँदा नसुन्ने कोल्टे ठाउँ, गरिबलाई जिउन गाह्रो भएका जस्ता भावहरू एकल रूपमा प्रस्तुति हुने हुँदा यो गीत एकल हुनु स्वाभाविक छ ।

२ पूर्ण अंश परिशिष्ट क, पृ. ६४ ।

३ पूर्ण अंश र स्रोत परिशिष्ट क, पृ. ६४ ।

प्रस्तुतिका आधारमा यो गीत कण्ठ्यगीत हो । युवायुवती तथा स्कुले केटाकेटीहरूले गाउने प्रस्तुत गीत कुनै वाद्यवादन/नृत्यबिना नै गाउने गर्छन् । मनका भावहरूलाई गीतमार्फत् अभिव्यक्त गरिएको छ ।

समयका दृष्टिले प्रस्तुत गीत अध्ययन गर्दा यो सदाकालीक गीत हो । यो गीत गाउन कुनै निश्चित समय, अवसर वा पर्वको आवश्यकता पर्दैन जसले गर्दा यस गीतलाई सदाकालीक गीतको वर्गमा राख्नु स्वाभाविक हो ।

विषयका आधारमा अध्ययन गर्दा यो गीत गरिबीको भाव अभिव्यक्त गर्ने भएको हुँदा गरिबीगीत हो । आर्थिक अभावका कारण स्कुल जाने रहर अधुरो रहनु, गरिबलाई बाँचन धौधौ पर्नुजस्ता दुःख तथा अभावका भावहरू अभिव्यक्त छन् । प्रस्तुत गीतको कथ्य यस्तो छ :

फूलमयाको गाउँ कोल्टे छ जहाँ सुसेलेर बोलाउँदा सुन्न सकिन्न । विद्यालय रङ लगाएको जस्ताले छाएको छ । तिर्खा लाग्दा कुवाको पानी खाने, आफूलाई आफ्नै बाबुको माया लाग्ने, गाई धोबेको बगरमा चर्ने, स्कुल जाने रहर भएको, दाल, भात र डुकुको समस्या भएको, गरिबलाई जीवन धान्न गाह्रो भएको जस्ता गरिबी, अभाव, रहर, माया आदि भावहरू अभिव्यक्त छन् ।

४.१.४ अधि जाऊँ सानीकान्छी

बनकरिया जातिमा प्रचलित *अधि जाऊँ सानीकान्छी* लोकदोहोरीको मूल पाठ चेपाङ भाषामा छ । यो गीत उमेरका आधारमा अध्ययन गर्दा युवागीत हो । युवायुवतीले मायाप्रीतिका बारेमा आफ्ना मनका भावनाहरूलाई दोहोरीका रूपमा व्यक्त गरेका छन् ।

सहभागिताका दृष्टिले यो गीत दोहोरी गीत हो । युवायुवती (प्रेमीप्रेमिका) को भेटघाट र कुराकानी भएको छ । दुःखसुखलाई बराबरी बाँडीचुँडी गरौंला भेटघाट ईश्वरले जुराइदिएको भन्ने जस्ता भावहरू यसमा दोहोरीका रूपमा अभिव्यक्त छन् ।

प्रस्तुतिका आधारमा यो कण्ठ्य गीत हो । मायाप्रेमका भावहरूलाई स्वतःस्फूर्त प्रस्तुत गरिने, वाद्यवादन/नृत्यको खासै महत्त्व नरहने यो गीत प्रस्तुतिका आधारमा कण्ठ्य गीत हो ।

समयका आधारमा प्रस्तुत गीत सदाकालीक गीत हो । यो गीत गाउन कुनै निश्चित समयसीमा हुँदैन । प्रेमीप्रेमिकाबीच मायाप्रीतिका भावहरू कुनै पनि समयमा व्यक्त गर्न सकिने हुँदा यस गीतलाई सदाकालीक गीत मानिन्छ ।

विषयका आधारमा यस गीतलाई अध्ययन गर्दा प्रेमगीत हो । युवायुवतीबीचको प्रेमप्रसङ्ग नै यस गीतको कथ्य हो । मायाप्रेमको विषयको सेरोफेरोमा प्रस्तुत गीतको कथ्य भएकोले यसलाई प्रेम विषयक गीत मान्नु स्वाभाविक हुन्छ ।

प्रस्तुत गीतको कथ्य यस्तो रहेको छ : अघि जाऊँ सानीकान्छी, माया लगाऊँ, तिम्रो घर कहाँ पच्यो, आउ यता गरौँ चिनजानी अनि माया लगाऊँ । मेरो घर त सिलिङ्गे पच्यो, भेट भएको बेला धेरै कुराकानी गरौँ, छेउमा आई बस, माया लाउन कम्मर कस, मनको कुरा भनेको थिएँ एउटालाई, हाम्रो पुकार देउदाले सुनेछन्, चोखो माया सूर्यभैँ अटल, धेरै बोली नबसौँ गन्थन, बाँधौँ अब मायाको बन्धन, सुखदुःख सँगसँगै साटौँ, खोले भए नि हाँसेर खाऊँ जस्ता मायाप्रीति सुखदुःखका भावहरू अभिव्यक्त भएका छन् ।

४.१.५ भोर्लाको पातमा^५

बनकरिया जातिमा प्रचलित *भोर्लाको पातमा* गीतको मूलपाठ स्थानीय बनकरिया जातिको मातृभाषामा छ । युवायुवतीहरूले खानेकुराको बारेमा गीतमार्फत् प्रस्तुत गरेका छन् । खाना जीवनका लागि अपरिहार्य वस्तु हो र खान पाउनु अधिकारको कुरा पनि हो भन्ने भाव अभिव्यक्त भएको छ । भोकलाई मायाप्रेम र खानालाई प्राप्तिको प्रतीक देखाइएको छ ।

सहभागिताका दृष्टिले प्रस्तुत गीत एकल गीत हो । भोक लागेपछि खाना खानुपर्छ, खाना खान पखिने होइन, तातो तातै खानुपर्छ भन्नेजस्ता भावलाई एकल गीतका माध्यमबाट अभिव्यक्त गरिएको छ ।

प्रस्तुतिका दृष्टिले यो गीत कण्ठ्य गीत हो । कुनै औपचारिकता, वाद्यवादन/नृत्यविना नै यो गीत प्रस्तुत हुन्छ । जसले गर्दा यसलाई कण्ठ्यगीतको वर्गमा राख्नु स्वाभाविक छ ।

समयका आधारमा सदाकालीक गीत हो । यो गीत गाउन कुनै निश्चित समयसीमा वा औपचारिकताको जरुरत पर्दैन । कुनै पनि समयमा यो गीत प्रस्तुत गरिने हुँदा यो सदाकालीक गीत हो ।

विषयवस्तुका दृष्टिले अध्ययन गर्दा यो गीत गरिबीको चपेटामा परेका व्यक्तिहरूले अभावको भाव व्यक्त गरेको देखिन्छ । खान खान भाँडाबर्तन नभएकोले भोर्लाको पातमा भए पनि खाना खानुपर्छ, रक्सी पनि भोर्लाको पातमै खाऊँ भन्नेजस्ता चरम गरिबीको भाव अभिव्यक्त भएको छ । प्रस्तुत गीतको कथ्य यस्तो छ :

जीवन धान्नको लागि खाना खानुपर्ने, खाना खान थाल, कचौरा नभएको हुँदा भोर्लाको पातमै भए पनि खाऊँ, भोक लागेपछि खाना खानु नै पर्छ, जाँड पनि भोर्लाको पातमै खाऊँ, खाना तात्तातै खानुपर्छ । यसमा अभाव, गरिबीले ग्रस्त भए पनि जीवन धान्न खानुपर्छ, खाना सकेसम्म ताज खानुपर्छ भन्ने भावहरू व्यक्त भएका छन् ।

^५ पूर्ण अंश र स्रोत परिशिष्ट ख, पृ. ७४ ।

४.१.६ मलाई छोडी कहाँ गयौ ?^६

स्थानीय बनकरिया जातिमा प्रचलित मलाई छोडी कहाँ गयौ ? छोटो आकारको गीतको मूलपाठ बनकरियाको मातृभाषामा छ । मायाप्रेम, विछोड, मिलन आदि भाव अभिव्यक्त भएको यो गीत उमेरगत आधारमा युवागीत हो । प्रेमिकालाई प्रेमीले छोडेर गएको हुँदा प्रेमिकाले मेरो घर त यहाँ होइन रिचक तिम्ले मेरो भो विजोग भन्ने जस्ता विछोडका भावहरू व्यक्त भएका छन् ।

सहभागिताको आधारमा यो एकल गीत हो । प्रेमीले प्रेमिकालाई धोका दिएको हुँदा यहाँ प्रेमिकाले वियोगको बिलौना गाएको छ । छोटो भए पनि भावनात्मक यो गीत एकल गीत हो ।

प्रस्तुतिका दृष्टिले कण्ठ्य यो गीत प्रेमी र प्रेमिकाको विछोडमा प्रेमिकाबाट आफ्ना मनका पीडाका भावहरू व्यक्त गरिएको छ ।

समयका दृष्टिले जुनसुकै समयमा पनि गाइने यो गीत सदाकालीक गीत हो । प्रेमीप्रेमिकाबीच मिलन, विछोड हुने कुनै समयसीमा नहुने हुँदा यो गीत सदाकालीक हो ।

विषयका आधारमा माया, प्रेम, मिलन, विछोडजस्ता भावहरू अभिव्यक्त भएको हुँदा यो गीत प्रेमविषयक गीत हो । जहाँ प्रेमीले प्रेमिकालाई छोडेर कतै गएको भाव प्रेमिकाबाट व्यक्त भएको छ । प्रस्तुत गीतको कथ्य यस्तो छ :

घर त मेरो यहाँ होइन रिचक, तिम्ले गर्दा मेरो भो विजोक, घाँसे काट्नु बारीको कायालु, मलाई छोडी कहाँ गयौ मायालु भन्ने भाव पाइन्छ । प्रेमी र प्रेमिकाबीच भएको विछोडको पीडा यस गीतमा व्यक्त छ । विछोडको घाउ चहराएको प्रेमीको विछोडमा तड्पिएको भाव अभिव्यक्त भएको यो गीत छोटो भए पनि भावपूर्ण छ ।

४.१.७ न्वागीगीत^७

बनकरिया जातिमा प्रचलित *न्वागीगीत*को मूलपाठ बनकरियाको मातृभाषामा छ । बनकरिया जातिले पितृश्राद्धका रूपमा गाउने यो गीत उमेरका दृष्टिले प्रौढगीत हो । भूतप्रेतलाई पन्छाई पितृलाई सम्झने क्रममा भाँक्रीले फलाकदै यो गीत गाउँछन् ।

सहभागिताका आधारमा यो गीत सामूहिक गीत हो । पितृहरू सम्झने क्रममा भाँक्रीले फलाकदा समूहमा बसेर सबैले फलाक्ने हुँदा यो गीत सहभागिताका दृष्टिले सामूहिक हो ।

प्रस्तुतिका दृष्टिले अध्ययन गर्दा यो गीत नृत्य/वाद्यगीत हो । यो गीत गाउँदा (फलाकदा) भाँक्रीले ढ्याङ्ग्रो बजाउँदै नाचदै फलाक्ने हुँदा सामूहिक रूपमा नाचेर, ढ्याङ्ग्रो बजाएर न्वागी पर्व मनाउने प्रचलन छ ।

६ पूर्ण अंश र स्रोत परिशिष्ट ख, पृ. ७४ ।

७ पूर्ण अंश र स्रोत परिशिष्ट ख, पृ. ७६ ।

समयका दृष्टिमा यो गीत सामयिक हो । पितृश्राद्धका बेलामा मात्र यो गीत गाइने हुँदा यसको निश्चित समयसमीमा हुन्छ । त्यसैले यस गीतलाई समयका आधारमा सामयिक गीत मानिन्छ । वर्षको एकपटक मात्र यो पर्वगीत गाउने नयाँ अन्न खान सुरु गर्ने प्रचलन रहेकोले पनि यसलाई सामयिक गीत मान्नु स्वाभाविक हो ।

विषयका आधारमा प्रस्तुत गीतको अध्ययन गर्दा यो पार्विक गीत हो । वर्षमा एकपटक पितृश्राद्धको समयमा मात्र यो गीत गाइन्छ । यसमा पितृउद्धार, भूतप्रेत पन्छाउने विषयका कथ्यहरू हुन्छन्, न्वागीपर्व विषयक गीत भएको हुनाले यसलाई पार्विक गीत मान्नु स्वाभाविक हो । यस गीतको कथ्य यस्तो छ :

गोलको दलबन्दी, दाजुभाइ, दिदीबहिनीहरू तिम्रो, मेरो, हाम्रो सबैको राम्रो इच्छा राखौं, हाम्रै मानापार्थी खोलाको तल राखौं । तपाईं हाम्रो राशी आउला, भेद आउला, खस्रे भ्यागुता आउला उसको वाचा लिन्छ – अब वाचा मारी भूतप्रेत पन्छाइ मीठो-मसिनो खाई बसौं त निल । स्थानीय बनकरिया जातिले आफ्नो धर्मसंस्कृति र परम्परालाई जीवित राख्न यस्ता पर्वहरू मनाउने गरेका हो ।^८

४.१.८ आशीर्वादमन्त्रः

बनकरिया जातिमा प्रचलित *आशीर्वादमन्त्र*को मूलपाठ बनकरिया जातिको मातृभाषामा छ । उमेरका दृष्टिले यो मन्त्र प्रौढअन्तर्गतको हो । प्रौढहरूले सानालाई टीका लगाई आशीर्वाद दिने प्रचलन रहेको हुँदा यो मन्त्र प्रौढहरूले वाचन गर्दछन् ।

सहभागिताका आधारमा प्रस्तुत मन्त्रलाई अध्ययन गर्दा घरको एकजना प्रौढले आफूभन्दा सानालाई आशीर्वाद दिने चलन रहेकोले यो एकल आशीर्वादमन्त्र हो ।

प्रस्तुतिका आधारमा यो आशीर्वादमन्त्र कण्ठ्य हो । यो मन्त्र गाउँदा कुनै वाद्यवादन/नृत्य हुँदैन, त्यसकारण पनि यसलाई कण्ठ्य मान्नु स्वाभाविक हो ।

समयका दृष्टिले हेर्दा दसैंको अवसरमा आफूभन्दा सानालाई टीका लगाई आशीर्वाद दिने प्रचलन रहेको हुँदा यो सामयिक हो ।

विषयवस्तुका आधारमा यो पर्वविशेषमा गाइने हुनाले पार्विक गीत (मन्त्र) हो । छोटो आकारमा रहेको प्रस्तुत मन्त्र बनकरिया जातिमा प्रचलित पर्वविशेषको आशीर्वादमन्त्र हो । प्रस्तुत मन्त्रको कथ्य यस्तो :

दूबोजस्तै फैलिँदै जानू, ऎसेलुजस्तै भाँगिँदै जानू, पहाडजस्तै अटल रहनूजस्ता भाव अभिव्यक्त भएको छ । प्राकृतिक वस्तु (दूबो, ऎसेलु, पहाड) लाई जीवनको समीप्यता देखाइएको छ । बनकरिया जातिले पनि दसैं पर्वलाई अन्य जातिले भैं मनाउने प्रचलन रहेको यस मन्त्रले पुष्टि गर्दछ । विशेषतः प्रकृति (वनजङ्गल) को नजिक बस्न रुचाउने यो जातिले दसैं पर्वको आशीर्वादमन्त्रमा पनि वनस्पति र पहाडलाई प्रतीकका रूपमा व्यक्त गरेको पाइन्छ ।

८ हाँडीखोला-७ निवासी धोबे बनकरियासँगको प्रत्यक्ष वार्ताअनुसार ।

९ पूर्ण अंश र स्रोत परिशिष्ट ख, पृ. ७६ ।

४.१.९ निष्कर्ष

स्थानीय बनकरिया जातिमा प्रचलित र प्राप्त आठओटा लोकगीतहरूमध्ये पाँचओटा बनकरियाको आफ्नै मातृभाषामा छन् भने तीनओटा नेपाली भाषामा रहेका छन् । वनमा काँडा छ, ठाडो खोला, फूलमयाको गाउँ नेपाली भाषामा छन् भने अघि जाऊँ सानीकान्छी, भोर्लाको पातमा, मलाई छोडी कहाँ गयौ ?, न्वागीगीत र आशीर्वादमन्त्र बनकरियाको आफ्नै मातृभाषामा रहेका छन् । यी गीतहरू उमेरसमूह, सहभागिता, प्रस्तुति, समय र विषयका आधारमा वर्गीकृत भएका छन् ।

४.२ लोककथाको अध्ययन

स्थानीय बनकरिया जातिमा हाल प्रचलित र प्राप्त लोककथा केही नेपाली भाषामा र केही बनकरियाको आफ्नै मातृभाषामा रहेका छन् । प्राप्त आठओटा कथाहरूमध्ये पाँचओटा कथा नेपाली भाषामा र तीनओटा कथा बनकरियाको आफ्नै मातृभाषामा छन् । यी कथाहरूलाई शिल्पविधान, विषयवस्तु, उद्देश्य, आकार, दृष्टिबिन्दु र परिवेशका आधारमा अध्ययन तथा विश्लेषण गरिएको छ ।

४.२.१ राजाका सातभाइ छोरा^{१०}

स्थानीय बनकरिया जातिमा प्रचलित *राजाका सातभाइ छोरा* कथा शिल्पविधानका दृष्टिले चरित्रप्रधान कथा हो । कथामा प्रयुक्त पात्र राजा, कान्छो छोरा र कान्छी बुहारीकै चरित्रलाई यस कथाले समेटेको छ । बुहारी काटेर पानी पर्छ भन्ने मानसिकता बोकेको राजा राक्षससँग मिलेर आफ्नै लोग्ने मार्ने बुहारीका अमानवीय चरित्र नै यस कथाको कथावस्तु भएकोले यस कथालाई चरित्रप्रधान कथा मान्नु स्वाभाविक हो ।

विषयवस्तुका आधारमा प्रस्तुत कथालाई अध्ययन गर्दा यो कथा सामाजिक विषयवस्तुको हो । मानवसमाजभित्रकै विषयवस्तु, व्यवहार, समस्या आदि यस कथाका कथ्यविषय भएकोले यस कथालाई सामाजिक कथा मान्न सकिन्छ ।

उद्देश्यका आधारमा यो कथालाई अध्ययन/विश्लेषण गर्दा उपदेशमूलक कथाका रूपमा रहेको छ । लोग्नेस्वास्ती भनेका एकअर्काका भरमा हुन्छन् । एकको अस्तित्व नरहनुले अर्काको अस्तित्वमा पनि असर पर्छ । मानछे काटेर भोग लगाउँदा पानी पर्छ भन्ने अन्धविश्वासी मनोवृत्ति भएका राजालाई (समाज) यसले उपदेशनीति दिएको छ । हतारमा निर्णय गरेर फुर्सदमा पछुताउनु पर्छ भन्ने कुरालाई राक्षससँग मिलेर आफ्नै लोग्ने मार्ने स्वास्तीको व्यवहारबाट पनि प्रस्ट हुन्छ । यस्ता कुकार्यमा नलाग्न प्रेरित गर्ने सन्देशमूलक, उपदेशमूलक उद्देश्य प्रस्तुत कथाको रहेको हुँदा कथा नीतिप्रधान हो ।

१० कथाको पूर्ण अंश र स्रोत परिशिष्ट क, पृ. ६५ ।

राजा, राजाको कान्छो छोरा, बुहारी, राक्षस यस कथाका प्रमुख पात्र हुन् । यी सबै तृतीयपुरुष दृष्टिबिन्दुमा छन् । वक्ता र पात्र फरकफरक रहेका छन् ।

आकारका दृष्टिले हेर्दा यो कथा लघुआकारको हो । छोटो भए पनि कथाले सामाजिक विषय, उपदेशमूलक, चरित्रचित्रण तथा यथार्थतालाई समेटेको भने छ । राक्षसको प्रसङ्ग भने अमानवीय स्वभावको प्रतीकका रूपमा उल्लेख भएको मान्नुपर्छ । प्रस्तुत कथाको कथ्य यस्तो :

एकादेशमा एउटा राजा थियो । उसका सातभाइए छोराहरू थिए । सातै भाइ छोरा जङ्गलमा सिकार खेल्न जान्थे । यसरी दिन बित्दै जाँदा राजाले सातै भाइको विवाह गरिदियो । सबैको घरजम भयो । दिन बित्दै जाँदा एकदिन राजाले एउटा ज्योतिषीलाई आफ्ना बुहारीको लच्छिन-अलच्छिन के छ भनेर सोध्यो । ज्योतिषीले कान्छी बुहारी अलच्छिनी भएको र उसकै कारणले लामो खडेरी परेको बतायो । खडेरीबाट मुक्ति पाउन राजाले कान्छी बुहारीलाई काटेर इनारमा हाल्नुपर्ने उपाय ज्योतिषले बतायो । राजाले पनि एउटी बुहारी मारेर सबैको भलो हुने भए त्यसै गर्ने निधो गर्‍यो, तर यो कुरा बुहारीले थहा पाई लोग्नेस्वास्ती नै भागेर जङ्गलमा एउटा राक्षसकोमा पुगे । राक्षसको कुचक्रमा परेर आफ्नै लोग्नेलाई मारी र पछुतो मानी ... ।

कथा सन्देशमूलक छ भने कतैकतै अतिरञ्जना पनि छ । गल्ती गरेर पछुताउने मानवीय स्वभावलाई पनि सङ्केत गरेको छ । प्रारम्भमा सुख, खुसी, मध्यभागमा दुःख र अन्त्यमा पुनः सुखद अवस्थाको सिर्जना भएको हुँदा कथा सुखान्त हो ।

४.२.२ भ्यागुताले हात्ती निलेको^{११}

स्थानीय बनकरिया जातिमा प्रचलित *भ्यागुताले हात्ती निलेको* कथा नेपाली भाषामा रहेको छ । भ्यागुताले हात्ती निलेको जस्ता प्रसङ्गले कथडा अपत्यारिलो छ । भ्यागुताले हात्तीलाई निल्न सक्दैन तर निलेको देख्ने आँखाहरू छन् जुन समाजसामु सत्य हुन सक्दैनन् । प्रस्तुत कथालाई विभिन्न आधारमा वर्गीकरण गरी अध्ययन गरिएको छ ।

शिल्पविधाका दृष्टिले अध्ययन/विश्लेषण गर्दा यो कथा घटनाप्रधान कथा हो । भ्यागुताले हात्ती निलेको, भैंसीको पाडोले नुहाएर मात्र दूध खाएको जस्ता घटना कथाको प्रसङ्ग र विषय बनेका छन् । भ्यागुताले हात्ती निलेको घटनाक्रमलाई पुष्टि गर्न नसक्दा घरखेत गुमाउन पुगेका बाबुछोराले पाडोले नुहाएर मात्र दूध खाएको घटनाक्रमपछि आफ्नो गुमेको सम्पत्ति फिर्ता गर्न सफल भएका छन् । घटनाक्रमको प्रधानता रहेको हुँदा पनि यो कथा शिल्पविधानका आधारमा घटनाप्रधान कथा हो ।

विषयवस्तुका आधारमा यो कथा अति प्राकृतिक छ । हात्ती र भ्यागुताजस्ता जीवजन्तुको प्रसङ्ग र भूमिका प्रस्तुत कथाको कथ्य बनेको छ भने भैंसी, पाडो आदिको प्रसङ्गले पनि कथालाई अलि प्राकृतिक बनाएको छ ।

^{११} कथाको पूर्ण अंश र स्रोत परिशिष्ट क, पृ. ७६ ।

उद्देश्यका आधारमा यो कथालाई अध्ययन-विश्लेषण गर्दा कथा मनोरञ्जनप्रधान हो । भ्यागुताले हात्ती निल्नु, भैंसीको पाडोले धारामा नुहाएर मात्र दूध खानुजस्ता प्रसङ्गले गर्दा कथाको उद्देश्य मनोरञ्जन दिनु भन्ने देखिन्छ । देखेका सबै कुरा सत्य नहुन सक्छन् कहिलेकाहीं दृष्टिभ्रम पनि हुनसक्छ, त्यसैले कतिपय कुराहरू अरू सामु भन्नु हुँदैन भन्ने सन्देश पनि कथामा पाइन्छ । निरन्तरको अभ्यासले व्यवहारमा परिवर्तन ल्याउँछ भन्ने कुरालाई पाडोले धारामा नुहाएर दूध खाएको कुराले पनि पुष्टि गरेको छ । कथा मनोरञ्जन दिने तथा निरन्तर अभ्यासले कठिन काम पनि सरल हुन्छ भन्ने सन्देशप्रद पनि छ ।

कथामा बाह्य र आन्तरिक गरी दुईओटा दृष्टिबिन्दु हुन्छन् । कथाको केन्द्रीय पात्रको पुरुषअनुसार नै कथाको दृष्टिबिन्दुको पहिचान हुन्छ । यस कथामा बाबुछोरा पात्र हुन् । तृतीयपुरुषका रूपमा रहेका यी पात्रका आधारमा कथामा तृतीयपुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग छ । तृतीयपुरुष बाह्य दृष्टिबिन्दु हो ।

आकारका यो कथा लघुकथा हो । लघुतम, लघुमध्यम र बृहत् गरी चार प्रकारका कथाहरूमध्येमा यो कथा लघुआकारको कथा हो । अपत्यारिलो, अविश्वासिलो कथ्य रहेको यो कथा लोककथाको वर्गमा पर्दछ । बनकरिया जातिमा नेपाली भाषामै भन्ने र सुन्ने गरेको यो कथालाई आकारका दृष्टिले लघुआकारमा राखी अध्ययन तथा विश्लेषण गरिएको छ ।

यस कथाको कथ्य यस्तो छ :

एकदेशमा बाबु र छोरा थिए । छोरो गफाडी थियो । साथीले उसको नाम नै गफाडी राखेका थिए । एकदिन बाबुछोरा घुम्न जाँदा जङ्गलमा बास बस्न पुगेछन् । मध्यरातमा घनाजङ्गलमा एउटा पोखरीमा पानी खान लागेको हात्तीलाई भ्यागुताले निल्यो । यो दृश्य बाबुछोरा दुवैले देखेछन् । तर बाबुले छोरोलाई यो कुरा कसैलाई पनि नभन्नु भन्छ । तर गफाडीले उसका साथीलाई सुनायो । गफाडी र उसका साथीबीच बाजी थापाथाप भयो । गफाडीले हाच्यो र सबै सम्पत्ति हारी सुकुम्बासी बने । जङ्गल फडानी गरेर खेती गर्न थालेका बाबुछोराको भैंसी ब्याउँछ । त्यो भैंसीको पाडोलाई दूध खुवाउने बेलामा धारामा लगेर नुहाई तीनपटक भैंसीलाई घुमाएर मात्र पाडोलाई दूध खान दिन्थे । यसरी केही दिनपछि त्यो पाडोलाई नुहाउने बानी बस्छ । एकदिन गफाडीले आफ्ना साथीलाई यो कुरा सुनाउँछ । साथीले बाजी राख्ने भन्छन् र बाजी राख्छन् । घरमा ल्याएर साथीलाई त्यो दृश्य देखाएपछि गफाडीले बाजी जित्छ र आफ्नो गुमेको सबै सम्पत्ति फिर्ता लिन्छ । सुन्नेलाई ...

भ्यागुताले हात्ती निलेको कथा स्थानीय बनकरिया जातिमा प्रचलित कथा हो । नेपाली भाषामा मूलपाठ रहेको यो कथा अपत्यारिलो, अविश्वासिलो र असम्भव प्रकृतिको भए पनि सन्देशमूलक, मनोरञ्जनात्मक, घटनाप्रधान आदि कथाका तत्त्वहरूले गर्दा कथा अध्ययन र विश्लेषणीय छ ।

४.२.३ टुहुरी छोरी^{१२}

स्थानीय बनकरिया जातिमा प्रचलित टुहुरी छोरी कथाको मूलपाठ नेपाली भाषामा छ । सौतेनी व्यवहारबाट हेलित हुने बालबालिकाको अवस्थालाई कथामा प्रस्ट पारिएको छ । बालपात्रलाई केन्द्रीय भूमिकामा राखिएको प्रस्तुत कथा करुणाले भरिएको छ । कथालाई विभिन्न आधारमा वर्गीकरण गरी अध्ययन गरिएको छ ।

शिल्पविधानका आधारमा अध्ययन गर्दा यो कथा चरित्रप्रधान कथा हो । सौतेनी आमाको अमानवीय चरित्रका कारण एक अबोध बालिकाले भोगेको दुःखलाई कथाको कथ्य बनाइएको छ । कथामा घटनालाई भन्दा चरित्रलाई महत्त्व दिइएको छ । सौतेनी व्यवहारका कारण जीवन गुमाउन बाध्य भएकी टुहुरी छोरीको दुःखद अवस्था र छोरीको वियोगको पीडा सहन बाध्य बाबुको लाचारीपनलाई झल्काएको छ ।

विषयवस्तुका आधारमा यो कथा सामाजिक कथा हो । टुहुरी छोरी, सौतेनी आमा, आयआर्जनका लागि परदेशिने बाबु यस कथाका पात्र हुन् भने तिनै पात्रको दिनचर्या, सुखदुःखका जीवनभोगाइ आदि यस कथाको कथ्य हो जुन समाजको यथार्थ नजिक छ । सामाजिक धरातलमा घट्ने र घटेका विषयवस्तुमा आधारित कथा सामाजिक कथा हुन् । यो पनि सामाजिक विषयवस्तुमा आधारित कथा भएको हुँदा यसलाई सामाजिक कथा मान्नु स्वाभाविक हो ।

उद्देश्यका आधारमा प्रस्तुत कथालाई अध्ययन गर्दा नीतिप्रधान अर्थात् उपदेशप्रधान कथा हो । अबोध बालिकालाई दिएको पीडाले सौतेनी आमाको हृदय कस्तो कठोर हुन्छ भन्ने कुराको उजागर गरेको छ । एउटा, दुईटा व्यक्तिका चरित्रका कारण राम्रो गुण भएका सौतेनी आमाहरू पनि कलङ्कित बनेको यथार्थलाई उजागर गर्नु पनि कथाको उद्देश्य देखिन्छ । सामाजिक भेदभाव, दुर्व्यवहार, सौतेनी व्यवहार आदिलाई उजागर गरी त्यसमा सुधारको खाँचो देखाउनु पनि कथाको उद्देश्य हो ।

दृष्टिबिन्दुका आधारमा यो कथा तृतीयपुरुष (बाह्य) दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरिएको कथा हो । कथाकी केन्द्रीय पात्र टुहुरी छोरी र सौतेनी आमाको चारित्रिक व्यवहार, दुःख, पीडा, रोदन आदिलाई वक्ता अदृश्य रहेर अभिव्यक्त गरिएको हुँदा कथामा बाह्यदृष्टिबिन्दु पाइन्छ ।

आकारका दृष्टिले प्रस्तुत कथालाई अध्ययन गर्दा यो कथा लघुकथा हो । छोटो आयामको यो कथामा सर्प, भ्यागुतो, चरा, बाघ, भालुजस्ता मानवत्तर पात्रको भूमिकालाई पनि उल्लेख गरिएको छ । मानिस भएर पनि पक्षपात र पशुवत व्यवहार गर्ने सौतेनी आमा र पशु, पक्षी र जीवहरूले गरेको सहयोगी व्यवहारलाई हेर्दा दुई खुट्टा टेकेर मात्र मान्छे भइँदैन मान्छे हुनलाई मानवीय भावना हुनुपर्छ भन्ने सङ्केत पनि पाइन्छ । पशुपक्षीसँगको दोहोरो वार्तालापले कथा दन्त्यकथाको हाराहारीमा देखिए तापनि सौतेनी व्यवहार र गरिबीलाई नियाल्दा कथा सामाजिक यथार्थताको धरातलमा खटा छ भन्न सकिन्छ । प्रस्तुत कथाको कथ्य यस्तो छ :

^{१२} कथाको पूर्ण अंश र स्रोत परिशिष्ट क, पृ. ६८ ।

एकादेशमा एउटा परिवार हुन्छ । बाबु, आमा र छोरी, आमाको मृत्युपछि बाबुले अर्की स्वास्थ्यी ल्याउँछ र छोरीलाई सौतेनी व्यवहारले पिरोल्छ । एकदिन बाबु दसैं खर्च जुटाउन परदेशतर्फ लाग्छ । आमाले छोरीलाई धेरै असम्भव काम गर्न लगाउँछे । उसलाई चरा, भ्यागुता, बाघ, भालु, सर्प आदिले सहयोग गरेकाले उसले आमाले अह्राएका कामहरू सजिलै पार लगाउँछे । एकदिन पात टिप्न जङ्गल गएका बेला ऊ रूखबाट ओर्लन सकिदैन । त्यसैबेला उसले चरा हुन पाए पनि हुन्थ्यो भन्ने कामना गर्छे । यत्तिकैमा ऊ मर्छे र चरा हुन्छे । बाबु परदेशबाट आउँछ र छोरीलाई खोज्दै जङ्गल जान्छ । चराको रूपमा बाबुले छोरीलाई भेट्छ । आफूले ल्याइदिएको सुनौलो माला लगाइदिन्छ र छोरी टाढा नजाऊ है भन्छ । यत्तिकैमा कथा सकिन्छ ।

मान्छे चरा भएको, बाघ, भालु, सर्प आदिले सहयोग गरेको जस्ता अति काल्पनिक घटनाक्रमहरू पनि यस कथामा उल्लेख भएका छन् ।

४.२.४ राजाको छोरा^{१३}

स्थानीय बनकरिया जातिमा प्रचलित *राजाको छोरा* कथाको मूलपाठ नेपाली भाषामा छ । हुनेहार दैव नटार भन्ने भनाइलाई कथाले पुष्टि गरेको छ । सबैको आ-आफ्नो भाग हुन्छ, त्योभन्दा बढी कसैले पनि केही पाउन सक्दैनन् भन्ने कुरालाई पनि प्रस्तुत कथाले छर्लङ्ग पारेको छ ।

शिल्पविधानका दृष्टिले प्रस्तुत कथा घटनाप्रधान कथा हो । राजाको छोरो नजन्मनु, ज्योतिषी भविष्यवाणी गर्नु, छोरो जन्मनु, पन्ध्र वर्षको उमेर पुग्दा छोरो मर्नु आदि यस कथाका कथ्यगत घटनाक्रमहरू हुन् । कथाको सम्पूर्ण कथ्य घटनैघटनामा अधि बढेको हुँदा पनि यस कथाको शिल्पविधान घटनाप्रधान हुनु स्वाभाविक हो ।

विषयवस्तुका आधारमा यो कथा काल्पनिक छ । राजाको, ज्योतिषीको प्रसङ्गले कथा यथार्थको नजिक रहे पनि मुख्य पात्र राजाको छोरो मरेको कारणले भने कथालाई काल्पनिकताको नजिक पुऱ्याएको छ । नाकबाट सर्प निस्केर त्यही सर्पले डसेर मरेको घटनाक्रमलाई अध्ययन गर्दा यो कथा काल्पनिक कथा हो ।

उद्देश्यका दृष्टिले प्रस्तुत कथालाई अध्ययन गर्दा उपदेशमूलक छ । आफ्नो कर्म र भाग्यमा जेजति छ त्योभन्दा बढी कसैले केही पनि पाउन र लिन सक्दैन । भविष्यको चिन्ता गर्नुभन्दा वर्तमानमा रमाउनुपर्छ भन्ने सन्देश पनि कथाले दिएको छ । सन्तान नभएका कारण दुःखी बनेका राजा सन्तान पाएर पनि लामो समयसम्म खुसी रहन सकेनन् । धनदौलत जति भए पनि कालका अगाडि कसैको केही लाग्दैन भन्ने सन्देश पनि यस कथाले दिएको छ । धनसम्पत्तिभन्दा पनि सन्तानको महत्त्व बढी हुन्छ भन्ने आशय पनि कथामा पाइन्छ ।

१३ कथाको पूर्ण अंश र स्रोत परिशिष्ट क, पृ. ७२ ।

यस कथामा बाह्य (तृतीयपुरुष) दृष्टिबिन्दुको प्रयोग पाइन्छ । मुख्य अर्थात् केन्द्रीय पात्र राजाको छोरो तृतीयपुरुषका रूपमा कथामा प्रस्तुत भएकोले पनि दृष्टिबिन्दुका आधारमा यो कथालाई तृतीयपुरुष दृष्टिबिन्दु मान्नु स्वाभाविक हो ।

छोटो कथ्य तथा कथावस्तु भएको यो कथा आकारका आधारमा लघुकथा हो । बनकरिया जातिमा प्रचलित यो कथा उपदेशमूलक, तृतीयपुरुष दृष्टिबिन्दुमा संरचित, घटनाको प्रधानता रहेको, काल्पनिक हुँदाहुँदै पनि कतै यथार्थको नजिक देखिने लघुआकारको कथा हो । प्रस्तुत कथाको कथ्य यस्तो छ :

एकादेशमा एउटा राजा थियो । निःसन्तान भएका कारण ऊ दुःखित थियो । धेरै दान, धर्म, व्रत गरे पनि सन्तान नपाएका राजालाई एकदिन एउटा ज्योतिषीले केही समयमा सन्तान जन्मने तर त्यो पन्ध्र वर्ष पुगेपछि कालो सर्पले टोकेर मर्ने भविष्यवाणी गरे । यो कुराले राजालाई खुसी र दुःखी तुल्यायो । नभन्दै केही समयमा राजाको छोरा जन्म्यो । सबै खुसी भए । समय बित्दै गयो । एकदिन राजाको छोरा पन्ध्र वर्षको हुनु नै थियो । र भयो पनि । राजालाई नपुग्दो केही थिएन । चारै दिशा पाले-पहरा कहींकतैबाट सर्प आउन सक्ने सम्भावना नै थिएन । तर हुने हनामी कसै गरे पनि टर्दै नभनेभैं राजाको छोरोले हाच्छ्र्यूँ गर्दा आफ्नै नाकबाट सर्प निस्केर टोक्यो र त्यहीँ राजाको छोराको प्राण गयो ।

कथाले सन्तानको वियोगलाई देखाएको छ । सन्तानका लागि दम्पति कति पीडित हुन्छन्, सम्पत्ति भएर पनि राजाले छोरा बचाउन नसक्नु, कालका अगाडि कसैको केही नलाग्नु, हुनुपर्ने कुरा भएरै छाड्छ भन्ने कुरालाई कथाले उल्लेख गरेको छ ।

४.२.५ राजाको आयु^{१४}

राजाको आयु कथा बनकरिया जातिमा प्रचलित कथा हो । कथामा आफ्नो आयु लामो छ भन्ने ज्योतिषीको मृत्यु भएको र आयु सिद्धियो भनिएका राजाको आयु लम्बिएको घटनालाई देखाइएको छ । अन्धविश्वासले सामान्यलाई मात्र होइन राजारजौटालाई पनि जकडेको कुरा पनि कथाले व्यक्त गरेको छ ।

शिल्पविधानका आधारमा चरित्रप्रधान यस कथामा ज्योतिषी, राजा र मन्त्रीको चरित्रलाई उजागर गरिएको छ । ज्योतिषीको भूटो चरित्र, राजाको शङ्कालु चरित्र र मन्त्रीको यथार्थ उजागर गर्ने चरित्र नै कथाका कथ्य हुन् । तुरुन्तै सबैमाथि विश्वास गरिहाल्ने चरित्रका राजा, कल्पनामा डुब्ने, हीनताग्रन्थि सक्रिय भएका दमित पात्रका रूपमा यस कथाका प्रमुख पात्र राजाको चरित्रले नै यस कथालाई चरित्रप्रधान कथा मान्नु स्वाभाविक हो ।

विषयवस्तुका आधारमा अध्ययन गर्दा यो कथा सामाजिक कथा हो । राजा, मन्त्री, ज्योतिषी, राज्य आदि कुराको उल्लेख हुनुले पनि यो कथाको विषयवस्तु मानवसमाजभित्रै छ

^{१४} कथाको पूर्ण अंश र स्रोत परिशिष्ट क, पृ. ७१ ।

भन्ने हो । मानवसमाजमै छलकपट, ढाँट, चिन्ता, दुःखसुख आदि हुन्छन् । यिनै सामाजिक विषयवस्तुले नै यो कथा सामाजिक कथा हो ।

उद्देश्यका आधारमा हेर्दा यो कथा उपदेशमूलक छ । कसैलाई पनि तुरुन्तै विश्वास गरिहाल्नु हुँदैन भन्ने उपदेश यस कथामा पाइन्छ । राजाले शत्रु, मित्रु नचिनी ज्योतिषीको विश्वास गर्नाले राजा चिन्ताग्रस्त बन्नुपर्थ्यो । बाठो र चलाख मन्त्रीले राजाको आयु बढाउन ज्योतिषीलाई मारिदियो । अर्थात् २० वर्ष आयु छ भन्ने ज्योतिषी तुरुन्तै मर्न्यो । यो सबै घटनाक्रमले पनि अरूको कुटनीतिक चाललाई आफ्नो पनि कुटनीतिक चालले नै परास्त गर्नुपर्छ भन्ने सन्देश पनि कथाले दिएको छ ।

तृतीयपुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग भएको यस कथामा केन्द्रीय पात्र राजा र सहायक पात्र मन्त्री र ज्योतिषी पनि तृतीयपुरुष भएकाले पनि यस कथालाई तृतीयपुरुष दृष्टिबिन्दुको कथा मान्न सकिन्छ ।

आकारका आधारमा लघुआयामको प्रस्तुत कथामा छोटो कथ्यमा चरित्र/घटनाक्रमलाई अभिव्यक्त गरिएको छ । कथाको कथ्यलाई अध्ययन गर्दा कथा लघुआयामको हो ।

अन्धविश्वासी, सबैलाई तुरुन्तै मित्र ठान्ने स्वाभावका राजाको चिन्ताग्रस्त अवस्था, ज्योतिषीको कुटनीतिक चालबाजी र मन्त्रीको साहसलाई कथाले समेटेको छ । समग्रमा कथा सन्देशमूलक, चरित्रप्रधान, लघुआयामको कथा हो । प्रस्तुत कथाको कथ्य यस्तो छ :

एकादेशमा एउटा अत्यन्त मिलनसार राजा हुनु, सबैसँग सल्लाह र परामर्शबाट शासन चलाउने, सबैलाई तुरुन्तै विश्वास गरिहाल्ने स्वभावका राजा थिए । एकदिन शत्रु पक्षकाले एउटा ज्योतिषीलाई राजालाई षड्यन्त्रमा पार्न पठाउँछ । राजालाई ज्योतिषीले दुई महिनामात्र आयु रहेको बताउँछ । यसले गर्दा राजा चिन्तित बन्दै जान्छन् । यो कुरा मन्त्रीले थाहा पाएपछि ज्योतिषीलाई बोलाएर राजाकै सामुन्नेमा राजाको र त्यो ज्योतिषीको आयु सोधेपछि बीस वर्ष आयु छ भन्ने ज्योतिषीलाई मन्त्रीले तरवारले काटी मारिदिन्छ । यसरी कथाको अन्त्य हुन्छ ।

समग्रतामा कथाले व्यक्ति नचिनी नजानी विश्वासमा पर्नु हुँदैन । भविष्यवाणी मिथ्या पनि हुन्छ । चिन्ताले चितामा पुऱ्याउँछ, साहस र धैर्यले काम लिनुपर्छ भन्नेजस्ता सन्देशहरू प्रदान गरेको छ ।

४.२.६ कुखुराको माइत^{१५}

स्थानीय बनकरिया जातिमा प्रचलित *कुखुराको माइत* कथाको मूलपाठ बनकरियाको आफ्नै मातृभाषामा छ । सौता र लोग्नेको हँलामा पिरोलिएकी एक नारी कथाकी मुख्य पात्र छ । कुखुरा (मानवेत्तर) पात्रको माइतघरको प्रसङ्ग यस कथाको कथ्य हो । बनकरिया जातिमा निकै लोकप्रिय यो कथा युवायुवतीहरूले नेपाली भाषामा पनि भन्ने गरेको पाइन्छ । प्रस्तुत कथालाई माथिको वर्गीकरणका आधारमा यहाँ अध्ययन तथा विश्लेषण गरिएको छ ।

^{१५} कथाको पूर्ण अंश र स्रोत परिशिष्ट ख, पृ. ७७ ।

शिल्पविधानका दृष्टिमा प्रस्तुत कथा चरित्रप्रधान कथा हो । सौता र लोगनेको चरित्रका कारण आफ्नो घर छाडेर कुखुराको माइत जान विवश बनेकी जेठी श्रीमती आज्ञाकारी, कर्तव्यनिष्ठ र सत्चरित्रकी पात्रका रूपमा कथामा उपस्थित छ । कथामा घटनाक्रमलाई भन्दा चरित्रलाई महत्त्व दिइएको छ । लोगनेको धेरै स्वास्नी बटुल्ने चरित्र, सौताको अरूलाई हँला गर्ने चरित्रले नै कथाको कथ्य अगाडि बढाएको छ । कुखुराको माइत गएकी जेठीले बाटोमा सबैले अह्नाएको र भनेको कुरा मानेर आज्ञाकारी चरित्र देखाएका कारण सुनको थाल सुनको पिकालगायत सम्पत्ति पाउन सफल भएकी छे । यसकारण पनि यो कथा चरित्रप्रधान कथा हो ।

विषयवस्तुका आधारमा हेर्दा यो कथा काल्पनिक कथा हो । मान्छे कुखुराको माइत जानु, सुनका थाल, पिकालगायत धेरै सम्पत्ति प्राप्त गर्नु यथार्थभन्दा धेरै टाढा देखिन्छ । कथामा काल्पनिकता बढी छ । सौतेनी व्यवहार, बहुविवाह आदि यथार्थका नजिक रहे पनि सामान्य काम गराईबाट यतिविघ्न धन आर्जन गर्नु असम्भव देखिन्छ । त्यसकारण पनि यो कथा विषयवस्तुका दृष्टिले काल्पनिक कथा हो ।

उद्देश्यका दृष्टिले यो कथाको अध्ययन गर्दा कथालाई नीतिप्रधान मान्न सकिन्छ । कसैले कसैलाई हँला गर्नु हुन्न, आजको दुःखी भोली सुखी हुनसक्छ, कसैको गति एकनाशको हुँदैन । आज्ञाकारिता, सत्चरित्र मान्छेका सबैभन्दा महत्त्वपूर्ण गुण हुन् जसले मान्छेलाई महान् बनाउँछ । घमण्डले अस्तित्व नै निमित्त्यान्न बनाइदिन्छजस्ता सन्देशहरू पनि यस कथामा पाइन्छन् । लातले हालेको कुकुर खाटमाथि भन्ने उखानलाई पनि कथाले चरितार्थ तुल्याएको छ ।

दृष्टिबिन्दुका आधारमा कथालाई दुई वर्गमा राखिएको छ । प्रथमपुरुष दृष्टिबिन्दु (आन्तरिक) र तृतीयपुरुष दृष्टिबिन्दु (बाह्य) गरी कथामा दुई प्रकारका दृष्टिबिन्दु हुन्छन् । कथाका प्रमुख तथा केन्द्रीय पात्रका पुरुषका आधारमा कथाको दृष्टिबिन्दु छुट्याइन्छ । यस कथामा जेठी स्वास्नी केन्द्रीय तथा प्रमुखप नारीपात्र हो, जो तृतीयपुरुषका रूपमा कथामा वर्णित छे । यसरी पात्रप्रयोगका आधारमा नै यो कथा तृतीयपुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग भएको कथा हो ।

आकारका आधारमा कथा विभिन्न वर्गका हुन्छन् । कुखुराको माइत कथा आकारका आधारमा लघुकथा हो । छोटो, छरितो र कतिपय काल्पनिक र अविश्वासिलो देखिए पनि कथा उपदेशमूलक, सन्देशमूलक छ । सत्यको ढिलै भए पनि जीत हुन्छ । रिस खा आफू बुद्धि खा अर्को भनेभैँ जेठीलाई हँला गर्ने कान्छी पात्रले पनि कथाबाट राम्रै पाठ सिकाएकी छे ।

प्रस्तुत कथाको कथ्य यस्तो :

एक देशमा लोगनेस्वास्नी हुन्छन् । लोगनेले कान्छी स्वास्नी ल्याउँछ । कान्छी स्वास्नी डाडे स्वभावकी हुन्छे । कान्छी र लोगने भएर जेठीलाई बहुतै हँला गर्छन् । लोगनेको हँला र सौताको कचकचले गर्दा जेठी कुखुराको माइत जाने निधो गरी घर छाडेर हिँड्छे । बाटोमा गाई, भैँसी, घोडा, बाखा आदिको गोठ, खोर सफा गरे खान दिने बताउँछन् । उसले सबै काम गर्छे । उसलाई खाना खान सुनको थाल या अरू नै थालमा खाने भन्दा ऊ सामान्य थालमा खाने भन्छे । सुनको पिका दिँदा ऊ सामान्य काठको पिकामा बस्छे । जति पनि ठाउँमा उसले

काम गरी त्यति ठाउँबाट उसले सुनको थाल र पिर्का पाई । यसरी ऊ धेरै सम्पत्ति लिएर घर फर्कन्छे । उसले घरमा सबै वृत्तान्त सुनाउँछे । डाडे स्वभावकी उसकी सौता पनि त्यसरी नै घर छाडेर जान्छे । तर घमण्डी उसले कसैले भनेको मान्दिन र रिचै फर्किन्छे । यसरी घमण्डीको घमण्ड तोडिएको छ ।

प्रस्तुत कथामा शिल्पविधान, विषयवस्तु, उद्देश्य, दृष्टिबिन्दु, आकार आदि कथाका तत्त्वहरूको राम्रो समायोजन भएको छ । बहुविवाह, सौतेनी व्यवहार सामाजिक यथार्थतामा छन् भने सुनको थाल, सुनको पिर्का प्राप्त गर्नु, कुखुराको माइत जानुजस्ता प्रसङ्ग भने अतिरञ्जनापूर्ण छन् ।

४.२.७ मान्छे र वनमान्छे^{१६}

स्थानीय बनकरिया जातिमा प्रचलित *मान्छे* र *वनमान्छे* कथाको मूलपाठ बनकरियाको मातृभाषामा छ । मान्छे र वनमान्छेलाई पात्र बनाइएको यस कथालाई विभिन्न आधारमा वर्गीकरण गरी अध्ययन र विश्लेषण गरिएको छ ।

शिल्पविधानका दृष्टिले अध्ययन गर्दा यो कथा घटनाप्रधान कथा हो । हलो काट्न भनी जङ्गल गएको मान्छेलाई भ्यागुताले आँखामा मुतिदिनु, मान्छे अन्धो हुनु, घर आउन नसक्नु, वनमान्छेले उसलाई खानु, कथाको अन्त्यमा वनमान्छेका सबै सन्तान रूखसँगै खोलामा डुब्नुजस्ता घटनाक्रम एकपछि अर्को आएका छन् । घटनैघटनाका कारण कथाको कथ्य अघि बढेकोले यस कथालाई शिल्पविधान आधारमा वर्गीकरण गर्दा घटनाप्रधान मान्नु स्वाभाविक हो ।

विषयवस्तुका आधारमा प्रस्तुत कथालाई अध्ययन गर्दा यो कथा प्राकृतिक विषयवस्तुमा आधारित देखिन्छ । वनमान्छे प्रमुख पात्रका रूपमा रहनु, घटनाक्रम सबैजसो जङ्गल (प्रकृति) मै घट्नुजस्ता कथाका कथ्यहरूलाई आधार मान्दा यो कथा विषयवस्तुका दृष्टिले प्राकृतिक विषयवस्तुप्रधान हो । चिउरीको रूख, भ्यागुतो जस्ता मानवेतर वस्तुहरू पनि कथा विषय बनेका छन् ।

उद्देश्यका आधारमा यो कथालाई अध्ययन गर्दा मनोरञ्जनप्रधान कथा मान्न सकिन्छ । कथामा वनमान्छे, भ्यागुता, चिउरीको रूप पनि मानवेतर पात्रका रूपमा रहेका हुँदा केटाकेटीहरूलाई मनोरञ्जन प्रदान गर्न पनि सकिने तथा कथाका घटनाक्रमहरूले उत्सुकता बढाउने हुँदा यो कथाको उद्देश्य मनोरञ्जन दिनु पनि हो ।

कथामा उल्लिखित पात्रहरू सबै तृतीयपुरुषका छन् । मान्छे, वनमान्छे मुख्य पात्र पनि तृतीयपुरुषमा रहेका हुनाले दृष्टिबिन्दुका आधारमा यस कथाको अध्ययन तथा विश्लेषण गर्दा तृतीयपुरुष दृष्टिबिन्दुको कथा हो । वक्ता कथामा पात्रका रूपमा नभई स्वतन्त्र रूपमा रहेकोले पनि यो कथा तृतीयपुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग गरिएको हुनु स्वाभाविक हो ।

^{१६} कथाको पूर्ण अंश र स्रोत परिशिष्ट ख, पृ. ७८ ।

मान्छे र वनमान्छे शीर्षकको यो कथा आकारका दृष्टिले अध्ययन/विश्लेषण गर्दा लघुकथा हो । यस कथामा मान्छे, वनमान्छे, भ्यागुतो आदिका छुट्टाछुट्टै प्रसङ्गहरू आएका छन् । आकारगत आधारमा लघुआकारमा रहेको यस कथामा विविध प्रसङ्गहरू रहेका छन् । यो कथाको कथ्य यस्तो छ :

एउटा सानो परिवार हुन्छ । जहाँ बाबु, आमा र एक छोरा हुन्छन् । निम्नवर्गीय त्यो परिवारमा छाक टार्न मजदुरी गर्नु नै पर्छ । एकदिन बाबु हलो काट्न भनी जङ्गल गएको हुन्छ । त्यसैबेला एउटा भ्यागुताले उसको आँखामा मुतिदिन्छ र ऊ अन्धो हुन्छ । स्वास्नी-छोरालाई गुहार माग्छ तर उनीहरूले सुन्दैनन् । यत्तिकैमा वनमान्छेले उसलाई भेट्छ र खान्छ । त्यसपछि वनमान्छे उसको रूप धारण गरी घरमा जान्छ । केही समयपछि आफ्नो लोग्ने र बाबु होइन भन्ने थाहा पाएपछि उनीहरूले त्यसलाई एउटा ओढारमा थुन्छन् र त्यो मर्छ । त्यहाँ एउटा चिउरीको रूख उम्रन्छ । पछि त्यो रूख पनि ढल्छ र वनमान्छेका अरू सन्तान पनि मर्छन् ... ।

यस कथालाई विभिन्न आधारमा वर्गीकरण गरेर अध्ययन गर्दा जीवनमा दुःखकष्टहरू आइपर्दछन् । मान्छे र वनमान्छेका बीच मित्रता हुन सक्दैन, केटाकेटीहरू निःस्वार्थी, छलकपटरहित हुन्छन् भन्ने आशय पनि पाइन्छ । टुनामुना, थुक बोलेको जस्ता घटनाक्रमले कथालाई काल्पनिकतातर्फ डोर्‍याएको छ ।

४.२.८ टुहुरो^{१७}

स्थानीय बनकरिया जातिमा प्रचलित टुहुरो लोककथाले आमाको मृत्युपछि टुहुरो बनेको एक बालकको दुःखद अवस्थाको चित्रण गरेको छ । नेपाली भाषामा रहेको यस कथालाई विभिन्न आधारमा वर्गीकरण गरी अध्ययन गरिएको छ ।

शिल्पविधानका दृष्टिले यो कथा चरित्रप्रधान कथा हो । सौतेनी आमाको चरित्रका कारण एउटा बालकले घर छाड्नु परेको, बाबु लाचारी बनेको अवस्था कथामा उल्लेख छ । सौतेनी आमा र बाबुकै चरित्रका कारण कथामा बालकलाई जङ्गलमा लगेर छाड्ने चरम परिस्थितिको सिर्जना भएको छ । शिल्पविधानका आधारमा यो कथा चरित्रप्रधान कथा हो ।

विषयवस्तुका दृष्टिले यो कथा सामाजिक कथा हो । मानवसमाजमा घट्ने र घटेका यस्ता सौतेनी व्यवहारले निम्त्याएको समस्या कथाको विषयवस्तु हो । सौतेनी व्यवहारका कारण कसरी समाजमा बालबालिकाहरू अभिभावकविहीन हुन्छन् भन्ने कुराको यथार्थ प्रस्तुति छ । समाजमा आधारित विषयवस्तु कथाको कथ्य भएकोले यो कथालाई सामाजिक कथा मान्नु स्वाभाविक हो ।

उद्देश्यका दृष्टिले यो कथा नीतिमूलक/उपदेशमूलक छ । कान्छी स्वास्नीका वशमा परेर आफ्नो छोरोलाई जङ्गल पठाउने जोइटिङ्ग्रे बाबु तथा सौतेनी व्यवहार देखाएर

१७ कथाको पूर्ण अंश र स्रोत परिशिष्ट ख, पृ. ७४ ।

अमानवीय क्रियाकलाप गराई एउटा अबोध बालकलाई जङ्गलमा लगेर छाड्न लगाउने आमाको नामका कलङ्कित सौतेनी आमाहरूलाई यस कथाले त्यस्ता कुकर्म नगर्न उपदेश दिएको छ ।

दृष्टिबिन्दुका आधारमा यो कथालाई अध्ययन गर्दा कथाको प्रमुख तथा केन्द्रीय पात्र बालक भएको र कथाको कथ्य पनि बालककै सेरोफेरोमा अगाडि बढेको हुँदा कथा तृतीयपुरुष दृष्टिबिन्दुमा छ ।

आकारका दृष्टिले अध्ययन गर्दा यो कथा लघुतम कथा हो । छोटो आकारमा प्रस्तुत भएको यस कथामा मानवीय करुणा अभिव्यक्त भएको छ । सौतेनी व्यवहार सामाजिक यथार्थ धरातलमा रहेको भए तापनि वनमान्छेले बालकलाई लगेको । बालक पनि पछि वनमान्छे नै भएको जस्ता काल्पनिक कथ्यहरू पनि यस कथामा उल्लेख छन् । प्रस्तुत कथाको कथ्य यस्तो छ :

एकादेशमा एउटा परिवार हुन्छ । त्यहाँ बाबुआमा र एउटा छोरा हुन्छ । आमाको मृत्यु भएपछि बालक छोरो टुहुरो बन्छ । बाबुले सौतेनीआमा ल्याउँछ । सौतेनी आमाले बाबुलाई वशमा पार्छ र छोरालाई जङ्गलमा लगेर छाड्न लगाउँछे । जङ्गलमा एकलै छाडिएको बालकलाई वनमान्छेले लान्छ र त्यो बालक पनि वनमान्छे नै हुन्छ ।

सौतेनी व्यवहार, बहुविवाह सामाजिक यथार्थभिन्न नै पर्छन् त्यसैले सामाजिक यथार्थवादी हुँदाहुँदै पनि यो कथा वनमान्छेले मान्छे लगेको, मान्छे पनि वनमान्छे भएको जस्ता काल्पनिक प्रसङ्गले केही कपोलकल्पित पनि छ ।

४.२.९ निष्कर्ष

स्थानीय बनकरिया जातिमा प्रचलित र सङ्कलित आठओटा लोककथामध्ये केही कथाहरू बनकरियाको आफ्नै मातृभाषामा छन् भने केही नेपाली भाषामा छन् । मान्छे र वनमान्छे, कुखुराको माइत र टुहुरो कथा बनकरियाको मातृभाषामा मूलपाठ रहेका कथा हुन् भने भ्यागुताले हात्ती निलेको, राजाका सातभाइ छोरा, राजाको आयु, टुहुरी छोरी र राजाको छोरा पाँचओटा कथाको मूलपाठ भने नेपाली भाषामै छ । यी लोककथाहरू विषयवस्तुका आधारमा सामाजिक, प्राकृतिक र काल्पनिक, उद्देश्यका आधारमा मनोरञ्जन र उपदेश, दृष्टिबिन्दुका आधारमा बाह्य तथा आकारका आधारमा वर्गीकृत भएका छन् ।

४.३ गाउँखाने कथाको अध्ययन^{१८}

स्थानीय बनकरिया जातिमा हाल प्रचलित र प्राप्त गाउँखाने कथाहरू केही नेपाली भाषामा र केही बनकरियाको आफ्नै मातृभाषामा रहेका छन् । अड्को थापन र समय कटनी

^{१८} गाउँखाने कथाका पूर्णरूप र स्रोत परिशिष्ट क, पृ. ७३ ।

गर्न पनि कथा भन्ने र सुन्ने प्रचलन रहेको पाइन्छ । प्राप्त गाउँखाने कथाहरूलाई यहाँ माध्यम, विषयवस्तु र संरचनाका आधारमा वर्गीकरण गरी अध्ययन-विश्लेषण गरिएको छ ।

माध्यमका आधारमा प्राप्त गाउँखाने कथालाई अध्ययन गर्दा गद्यात्मक र पद्यात्मक दुवै माध्यमका रहेका छन् :

गद्यात्मक

| | | |
|-----------------------------|---|---------|
| एउटा घरका दुईओटा ढोका | – | नाक |
| पारि भित्तामा मृगका पाइला | – | नाइटो |
| पाँचभाइको साभे थाल | – | हत्केला |
| काटिन्छ, पोलिन्छ तर पाक्दैन | – | कपाल |
| बत्तीस सिकारी बीचमा सिकार | – | जिब्रो |

पद्यात्मक

| | | |
|---|---|--------|
| पानी आउँछ कुवा होइन, प्वाल छ भित्र देखिँदैन | – | आँखा |
| आयो-आयो देखिँदैन, गयो-गयो भेटिँदैन | – | भूकम्प |
| हात न खुट्टा उखेल्छ बुट्टा | – | पहिलो |

माध्यमका आधारमा गाउँखाने कथाको अध्ययन गर्दा स्थानीय बनकरिया जातिले गद्यात्मक र पद्यात्मक दुवै माध्यमका गाउँखाने कथाहरू भन्ने र सुन्ने गरेका छन् । युवायुवतीहरूले नेपाली भाषाका प्रचलित कथाहरू नै भन्ने गर्दछन् भने बूढापाकाहरूले आफ्नै मातृभाषामा पनि भन्ने गर्दछन् ।

विषयवस्तुका आधारमा

| | | | | |
|----------------|---|-------------------------------|---|----------|
| शरीरसम्बन्धी | – | एउटा घरका दुईओटा ढोका | – | नाक |
| | | पारि भित्तामा मृगको पाइला | – | नाइटो |
| | | पाँचभाइको साभे थाल | – | हत्केला |
| वस्तुसम्बन्धी | – | हात्ती छिन्थो पुच्छर अड्क्यो | – | सियोधागो |
| | | सुरिलो रूखको एउटै पात | – | पन्थौ |
| | | एकमुठी खर घुमाउने घर | – | छाता |
| प्राणीसम्बन्धी | – | अगाडि शङ्ख पछाडि पङ्ख | – | कुकुर |
| | | चाकले टेक्छ मुखले खान्छ | – | जुका |
| | | नखाऊँ भने दिनभरिको सिकार | | |
| | | खाऊँ भने कान्छा बाबुको अनुहार | – | बाँदर |
| | | कालो वनमा सानासाना नानी | – | जुम्रा |

| | | |
|-----------------|----------------------------|----------|
| प्रकृतिसम्बन्धी | – आयो-आयो देखिँदैन | |
| | गयो-गयो भेटिँदैन | – भूकम्प |
| | जता-जता आफू उतै-उतै बाबु | – छायाँ |
| | नीलो पोखरीमा सेता फूल | – तारा |
| | हात न खुट्टा उखेल्छ बुट्टा | – पहिरो |

स्थानीय बनकरिया जातिमा हाल प्रचलित र प्राप्त गाउँखाने कथालाई विषयवस्तुका आधारमा वर्गीकरण गरेर अध्ययन गर्दा शरीर, वस्तु, प्राणी र प्रकृतिसम्बन्धी गाउँखाने कथाहरू प्रचलनमा छन् । आफ्ना वरिपरि देखेका, भोगेका, प्राणी, प्रकृति, वस्तु र आफ्नै शरीर नै कथाका आधार बनेका छन् ।

संरचनाका आधारमा

| | | |
|----------------|-----------------------------|----------|
| सरलवाक्यात्मक | – नीलो पोखरीमा सेता फूल | – तारा |
| | पारिभित्तामा मृगको पाइला | – नाइटो |
| | एउटा घरका दुईओटा ढोका | – नाक |
| | भुँडे गोरुको एउटै सिङ | – |
| जटिलवाक्यात्मक | – लामो पुच्छर छ बाँदर होइन, | |
| | चार खुट्टा छन् जनावर होइन | – छेपारो |
| | जता-जता आफू उतै-उतै बाबु | – छायाँ |
| | आकाशकी परी पातालमा भरी | |
| | सूर्यलाई देख्दा भुतुकै मरी | – शीत |

यसरी स्थानीय बनकरिया जातिमा प्रचलित र यहाँ सङ्कलित गाउँखाने कथाहरू शरीर, वस्तु, प्राणी र प्रकृतिसम्बन्धी विषयमा आधारित यी आफ्नै वरिपरिका, आफूले देखे-जानेका र भोगेका विषयवस्तुसँग सम्बन्धित रहेका छन् । संरचनाका आधारमा यी सरल र जटिल गरी दुईप्रकारको वाक्यसंरचनाका छन् । सङ्ख्यात्मक रूपले थोरै भए पनि प्रयोगका दृष्टिले उल्लेख्य नै छन् । नेपाली र आफ्नै मातृभाषामा पनि कथा भन्नेसुन्ने गरेका बनकरिया जातिमा समयकटनी, मनोरञ्जन र अड्को थाप्ने क्रममा गाउँकथा भन्नेसुन्ने परम्परा छ ।

४.४ उखान/टुक्काको अध्ययन

स्थानीय बनकरिया जातिमा हाल प्रचलित र प्राप्त उखान/टुक्काको वर्गीकरण गरी अध्ययन गर्दा सामाजिक तथा नीतिचेतना, ज्ञानविज्ञान, कृषिव्यवसाय, लोकविश्वास, इतिहास, प्रकृति र पशुपक्षी आदिसँग सम्बन्धित रहेका छन् । नेपाली भाषामा प्रचलित उखान/टुक्का नै स्थानीय बनकरिया जातिमा पनि प्रचलनमा छन् । युवायुवतीले नेपाली भाषामा नै

उखान/टुक्का अभिव्यक्त गर्दछन् भने केही बूढापाकाहरूले भने आफ्नै मातृभाषामा पनि अभिव्यक्त गर्दछन् ।

लोग्नेस्वास्नीको भगडा परालको आगो, आफू भलो त जगतै भलो, भाइफुटे गंवार लुटेजस्ता उखान सामाजिक नीतिचेतनामा आधारित छन् ।

अनिकालमा बीउ जोगाउनु हुलचालमा जिउ जोगाउनु, तोरीको फूल देख्नु, अल्छी तिम्रो स्वादे जिब्रो, आए आँप गए भटारोजस्ता उखान/टुक्का कृषि व्यवसायमा आधारित छन् । आफ्ना दैनिक जीवन, अनुभव, व्यवहार आदिका आधारमा उखान संरचित छन् ।

हुनेहार दैव नटार, भाग्यको दाउ परीपरी आऊ, आयुको छोरालाई वायुले खाँदैन, आफू नमरी स्वर्ग देखिन्न, अजिङ्गरको आहारा दैवले जुराउँछ जस्ता उखान लोकविश्वासमा आधारित छन् । दिन नआई केही गरे पनि नमर्ने, खानेकुरा दैवले नै जुराउने भन्नेजस्ता अभिव्यक्तिले पनि यी उखान लोकविश्वाससम्बन्धी छन् ।

बूढा मरे भाषा सरे, डाँडाको जून, पुस फासफुस, चन्द्रमा दाहिने भए ताराको के लाग्छजस्ता उखान इतिहास र प्रकृतिसँग सम्बन्धित छन् । कागलाई बेल पाक्यो हर्ष न विस्मात्, कुखुरे बैँस, छेपाराको कथा, बाँदरको घाउ, अगुल्टाले हानेको कुकुर बिजुली चम्किँदा तर्सिन्छजस्ता उखान/टुक्कामा पशुपक्षीसँग आधारित छन् । कुकुर, अजिङ्गर, बाँदर, कागढ, छेपारो आदिको प्रसङ्गले गर्दा उखान/टुक्कामा प्रयोग भएका जीवजन्तु मानव समुदायकै वरिपरिका छन् । घुमाउरो अर्थ लाग्ने उखान/टुक्कामा प्रतीकात्मक रूपमा पशुपक्षीको प्रसङ्ग आएको छ ।

स्थानीय बनकरिया जातिमा हाल प्रचलित र यहाँ सङ्कलित उखान/टुक्काहरूमध्ये केही नेपाली भाषाका र केही आफ्नै मातृभाषाका रहेका छन् । युवायुवतीहरूले नेपाली भाषामै उखान/टुक्काको प्रयोग गर्छन् भने बूढापाकाहरूले भने आफ्नै मातृभाषामा पनि अभिव्यक्त गर्दछन् ।

सङ्कलित यी उखान/टुक्काहरू सामाजिक नीतिचेतना, कृषिव्यवसाय, लोकविश्वास, इतिहास, प्रकृति, पशुपक्षी आदि विविध विषयसँग सम्बन्धित रहेका छन् । आफ्नै वरिपरि रहेका विषयवस्तु, भोगेका अनुभव, प्राकृतिक वस्तु र आफ्नै नजिकमा रहेका पशुपक्षीहरू पनि प्रचलित उखान/टुक्काका विषय बनेका छन् । सङ्ख्यात्मक रूपले थोरै भए पनि प्रयोगका आधारमा यी उखान/टुक्काहरू महत्त्वपूर्ण छन् ।

४.५ निष्कर्ष

बनकरिया जातिमा प्रचलित र यहाँ सङ्कलित लोकगीतको सङ्ख्या आठ रहेको छ । सङ्कलित गीतहरूमा तीनओटा नेपाली भाषामा छन् भने पाँचओटा बनकरियाको आफ्नै मातृभाषामा छन् । प्राप्त गीतहरू उमेरसमूह, सहभागिता, प्रस्तुति, समय र विषयवस्तुका आधारमा वर्गीकृत भएका छन् ।

यस्तै सङ्कलित आठओटा लोककथाहरूमा तीनओटा कथाको मूलपाठ बनकरियाको मातृभाषामा र पाँचओटा कथाको मूलपाठ नेपाली भाषामा रहेको छ । युवायुवतीहरूले नेपाली भाषालाई नै माध्यम भाषा बनाएकोले केही बूढापाकाहरूमात्र आफ्नो मातृभाषामा कथा भन्ने र सुन्ने गर्दछन् । सङ्कलित यी कथाहरू शिल्पविधान, विषयवस्तु, उद्देश्य, दृष्टिबिन्दु र आकारका आधारमा वर्गीकृत भएका छन् । आकारगत आधारमा प्राप्त सबै कथा लघुआकारका छन् भने सबैमा तृतीयपुरुष दृष्टिबिन्दुको प्रयोग छ । केही मनोरञ्जनप्रधान कथा छन् भने केही उपदेश र सन्देशमूलक छन् । विषयवस्तुका दृष्टिले सङ्कलित कथाहरू सामाजिक, काल्पनिक, प्राकृतिक, घटनाप्रधान र चरित्रप्रधान रहेका छन् ।

बनकरिया जातिमा प्रचलित र यहाँ सङ्कलित गाउँखाने कथाहरू केही नेपाली भाषामा र केही मातृभाषामा रहेका छन् । यहाँ सङ्कलित गाउँखाने कथाहरू माध्यम, विषयवस्तु र संरचनाका आधारमा वर्गीकृत भएका छन् । माध्यमका रूपमा गद्यात्मक र पद्यात्मक, विषयवस्तुका दृष्टिले शरीरसम्बन्धी, वस्तुसम्बन्धी, प्राणीसम्बन्धी र प्रकृतिसम्बन्धी तथा संरचनाका दृष्टिले सरल र जटिल वाक्यात्मक ढाँचामा रहेका छन् । धेरैजसो गाउँखाने कथाहरू दैनिक जनजीवनसँग सम्बन्धित छन् भने प्रकृति र पशुपक्षी पनि गाउँखाने कथाका विषय बनेका छन् ।

बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको अर्को विधा उखान/टुक्का हो । पुर्खाहरूको लामो अनुभवबाट खारिएका यी उखान/टुक्काहरू केही नेपाली भाषामा र केही आफ्नै मातृभाषामा छन् । यी उखान/टुक्काहरू सामाजिक नीतिचेतना, कृषिव्यवसाय, लोकविश्वास, इतिहास, प्रकृति र पशुपक्षीसँग सम्बन्धित छन् । सङ्ख्यात्मक रूपले उल्लेख्य नभए पनि प्रयोगका दृष्टिले महत्त्वपूर्ण छन् ।

पाँचौँ परिच्छेद उपसंहार

मकवानपुरका बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको अध्ययन शीर्षकको यस अध्ययनपत्रमा पाँच परिच्छेद छन् ।

परिच्छेद एक अध्ययनपरिचयसित सम्बन्धित छ । यसअन्तर्गत अध्ययनशीर्षक, अध्ययनप्रयोजन, विषयपरिचय, समस्याकथन, अध्ययनको उद्देश्य, पूर्वकार्यको समीक्षा, अध्ययनको औचित्य र महत्त्व, अध्ययनक्षेत्र र सीमाङ्कन, सामग्रीसङ्कलन, अध्ययनविधि, अध्ययनपत्रको रूपरेखा उपशीर्षकहरू रहेका छन् ।

परिच्छेद दुई मकवानपुर जिल्लाको हाँडीखोला गा.वि.स., वडा नं. ७ का स्थानीय बनकरिया जातिको जातिगत परिचयसित सम्बन्धित छ । राक्सिरा र खैराङ पुख्र्यौली थलोबाट करीब ७०/८० वर्ष पहिले बसाइँ सरी स्थानीय बनकरिया जाति मकवानपुर जिल्लाको दक्षिणपश्चिम चुरे वनतर्फ भौँतारिँदै विगत २० वर्षदेखि हाँडीखोला गा.वि.स., वडा नं. ७ ट्वाङ्ग्राखोला किनारमा बसोबास गर्न थालेको हो । तेह्र घरधुरीमा ६६ जनाको सङ्ख्यामा रहेको यस जातिको मुख्य पेसा खेती भए पनि बिहान-बेलुकाको गर्जो टार्न यिनलाई धौधौ पर्छ । सामान्य खरका भुपडीमा बसोबास गर्दैरहेको यो जातिको आर्थिक, शैक्षिक अवस्था ज्यादै कमजोर रहेको छ । व्यवस्था परिवर्तनसँगै आएको चेतनाको लहरले हाल यिनीहरूले आफ्ना बालबालिकालाई विद्यालय पठाउन थालेका छन् भने प्रौढहरू प्रौढशिक्षामा सम्मिलित रहन थालेका छन् । यिनीहरूलाई आर्थिक रूपमा नेपाल सरकार, जिविस, गाविस तथा विभिन्न सङ्घसंस्थाले केही राहत सहयोग उपलब्ध गराउँदै आएका छन् । यिनीहरू लोकगीत, लोककथा, गाउँखानेकथा, उखान र टुक्काहरूको माध्यमबाट आफ्ना अभिव्यक्तिहरू प्रकट गर्दछन् ।

चेपाङ जातिकै एक हाँगाका रूपमा रहेको यो जातिको भाषा, धर्म, संस्कृति, परम्परा चेपाङसँग ठ्याक्कै मिल्छ । यो जाति वनमा आश्रित भएका कारण बनकरिया नामले चिनिएको हो ।

परिच्छेद तीन बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको विधागत वर्गीकरणसित सम्बन्धित छ । लोकगीत, लोककथा, गाउँखानेकथा, उखान एवम् टुक्काको प्रचलनलाई

अभिव्यक्तिका रूपमा यस जातिमा रहेको छ । यहाँ प्राप्त लोकगीतहरूलाई प्रस्तुति, विषय, सहभागिता, उमेरसमूह, समयका आधारमा वर्गीकरण गरिएको छ । प्राप्त आठओटा लोकगीतहरूमध्ये पाँचओटा स्थानीय बनकरियाको मातृभाषामा छन् भने बाँकी तीनओटा नेपाली भाषामा छन् । न्वागीगीत र आशीर्वाद मन्त्र पार्विक गीत हुन् भने अन्य गीतहरू सदाकालिक हुन् । प्रेमविषयक गीतहरू प्रायः युवायुवतीले गाउँछन् । *अघि जाऊँ सानीकान्छी* लोकदोहोरी गीत हो ।

बनकरिया जातिमा लोककथाको पनि प्रचलन छ । राजाका सातभाइ छोरा, मान्छे र वनमान्छे, भ्यागुताले हात्ती निलेको, कुखुराको माइत, टुहुरी छोरी, राजाको आयु, राजाको छोरा, टुहुरो शीर्षकका आठओटा कथाहरू सङ्कलित छन् । यी आठओटा लोककथाहरूमध्ये तीनओटा स्थानीय मातृभाषामा र पाँचओटा नेपाली भाषामा छन् । यी कथालाई यहाँ शैली, उद्देश्य, विषयवस्तु र आकारका आधारमा वर्गीकरण गरिएको छ । मान्छे र वनमान्छे (मान्ता र चिडलान), कुखुराको माइत (वाको माइत), टुहुरो (भ्यान्जीबेला) कथा स्थानीय बनकरिया जातिको आफ्नै मातृभाषामा छन् । प्राप्त अन्य कथा नेपाली भाषामा छन् ।

बनकरिया जातिमा हाल प्रचलित र प्राप्त गाउँखानेकथालाई यसै परिच्छेदमा वर्गीकरण गरिएको छ । प्राप्त गाउँखानेकथालाई विषयवस्तुका आधारमा वस्तुसम्बन्धी, प्राणीसम्बन्धी, शरीरसम्बन्धी, प्रकृतिसम्बन्धी तथा संरचनाका आधारमा गद्य, पद्य गरी वर्गीकरण गरिएको छ ।

बनकरिया जातिमा सामाजिक तथा नीतिचेतना, ज्ञानविज्ञान, कृषिव्यवसाय, लोकविश्वास, इतिहास, प्रकृति, पशुपक्षीसम्बन्धी उखान/टुक्काहरू प्रचलनमा छन् । युवायुवतीले नेपाली भाषालाई नै माध्यम भाषा बनाएका हुँदा बूढापाकाले मात्र आफ्नै मातृभाषामा उखान/टुक्का अभिव्यक्त गर्दछन् ।

परिच्छेद चार बनकरिया जातिमा प्रचलित लोकसाहित्यको अध्ययनसित सम्बन्धित छ । प्राप्त लोकगीतलाई उमेरसमूहका आधारमा अध्ययन गर्दा वनमा काँडा छ, ठाडोखोला, अघि जाऊँ सानी कान्छी (अघि बढ्चु हुसकाय), भोर्लाको पातमा, फूलमयको गाउँ, मलाई छोडी कहाँ गयौ ? गीतहरू युवागीतअन्तर्गत पर्दछन् । यी गीतमा माया, प्रेम, मिलन-विछोडजस्ता भावहरू अभिव्यक्त भएका छन् । न्वागीगीत र आशीर्वादमन्त्र प्रौढगीतअन्तर्गत पर्दछन् । न्वागीपर्वमा गाइने न्वागीगीत प्रौढहरूले गाउँछन् भने आशीर्वचनमन्त्र पनि प्रौढ मान्यजनबाट टीका लगाइदिँदा गाउने प्रचलन छ । पर्व आदि विशेषमा गाइने गीत पार्विक गीत हो भने अन्य सबै गीतहरू समयका आधारमा सदाकालिक छन् । अघि जाऊँ सानी कान्छी एउटामात्र लोकदोहोरी गीत हो भने न्वागीगीत सामूहिक र अन्य छओटा एकल गीत रहेका छन् । वर्गीकरणका मापदण्डलाई आधार मानेर यी गीतहरूलाई यस परिच्छेदमा अध्ययन गरिएको छ । प्राप्त गीतहरूमध्ये चारओटा प्रेमविषयक, एउटा परिवेशमूलक, दुईओटा गरिबी र दुईओटा पर्व विषयक रहेका छन् । भोर्लाको पातमा खाना खाने, रक्सी खानेजस्ता कुराले एकातिर गरिबीको सङ्केत गरेको छ भने अर्कातिर जातीय संस्कार पनि व्यक्त भएको छ ।

बनकरिया जातिमा प्रचलित अर्को लोकसाहित्यिक विधा लोककथा हो । यहाँ सङ्कलित यी आठओटा कथाहरू शिल्पविधानका आधारमा चरित्रप्रधान र घटनाप्रधान, उद्देश्यका आधारमा मनोरञ्जन र नीतिप्रधान, विषयवस्तुका आधारमा सामाजिक, प्राकृतिक, यथार्थपरक र काल्पनिक गरी वर्गीकृत भएका छन् । भ्यागुताले हात्ती निलेको, मान्छे र वनमान्छे, राजाको छोरा घटनाप्रधान कथा हुन् भने टुहुरो, राजाका सातभाइ छोरा, कुखुराको माइत, टुहुरी छोरी र राजाको आयु चरित्रप्रधान कथा हुन् । भ्यागुताले हात्ती निलेको, मान्छे र वनमान्छे, टुहुरी छोरी, राजाको आयु, कुखुराको माइत, टुहुरो, राजाको छोरा आदि कथा नीतिमूलक छन् । सौतेनी व्यवहार, अन्धविश्वास, हतारमा निर्णय गरेर फुर्सदमा पछुतो मान्ने मानवीय प्रवृत्तिलाई कथाहरूले उद्घाटन गरेका छन् । कुखुराको माइत गएर धेरै धनसम्पत्ति ल्याउनु, भ्यागुतो, सर्प, चरा, बाघ, भालु आदि पशुपक्षीले टुहुरी छोरीलाई सहयोग गर्नुजस्ता प्रसङ्गले कथामा काल्पनिकताको राम्रो संयोजन भएको देखिन्छ । मानव भएर पशुवत् व्यवहार गर्ने सौता र सौतेनीआमालाई उपदेश र सन्देश पनि दिइएको छ । राजाको आयु कथाले अन्धविश्वासी प्रवृत्तिलाई सङ्केत गरेको छ । आफ्नो कर्म र भागमा भएभन्दा बढी कसैले केही नपाउने तथा कालका अगाडि कसैको केही नलाग्ने कुरालाई राजाको छोरा कथाले प्रस्ट्याएको छ ।

बनकरिया जातिमा प्रचलित र प्राप्त यी कथाहरू सङ्ख्यात्मक रूपले न्यून भए पनि महत्त्वपूर्ण छन् । बनकरिया जातिका आफ्नै मातृभाषामा प्रचलित लोककथाहरूलाई जस्ताको तस्तै नेपालीमा उल्था गर्दा तिनमा व्याकरणगत असङ्गतिहरू देखिनु स्वाभाविक छ । त्यस्ता असङ्गतिहरूमा लिङ्गगत, वचनगत, आदरगत, पुरुषगत आदि असङ्गति रहेका छन् ।

बनकरिया जातिमा प्रचलित अर्को लोकसाहित्यिक विधा गाउँखानेकथा हो । प्राप्त गाउँखानेकथालाई विषयवस्तुका आधारमा वस्तुसम्बन्धी, प्राणीसम्बन्धी, शरीरसम्बन्धी र प्रकृतिसम्बन्धी गरी वर्गीकरण गरिएको छ । गाउँखानेकथालाई संरचनागत आधारमा गद्य र पद्य रूपमा पनि अध्ययन र विश्लेषण गरिएको छ । लोकले दैनिक व्यवहारमा भोगेका, अनुभव गरेको विषयवस्तु नै गाउँखानेकथाको विषय बनेको छ ।

बनकरिया जातिमा उखान/टुक्काको पनि प्रचलन रहेको छ । यस जातिमा हाल प्रचलित र प्राप्त उखान/टुक्कालाई सामाजिक तथा नीतिचेतनासम्बन्धी, ज्ञानविज्ञानसम्बन्धी, कृषि व्यवसायसम्बन्धी, लोकविश्वाससम्बन्धी, इतिहाससम्बन्धी, प्रकृतिसम्बन्धी र पशुपक्षीसम्बन्धी विषयमा वर्गीकरण गरी अध्ययन गरिएको छ । नेपालीभाषामा प्रचलित उखान/टुक्का नै यो जातिमा पनि प्रचलित रहेको पाइएको छ । केही बूढापाकाहरूले नेपालीमा प्रचलित उखान/टुक्कालाई आफ्नो मातृभाषामा गरेका छन् । युवायुवतीले भने नेपाली भाषामा नै अभिव्यक्त गर्दछन् ।

सन्दर्भग्रन्थसूची

आदिवासी जनजाति बुलेटिन, अङ्क ५, असार, २०६१ ।

ओझा, रामनाथ र गिरी, मधुसूदन, शोध सिर्जना र संस्कृत काव्यशास्त्र, कीर्तिपुर : न्यु हीरा बुक्स इन्टरप्राइजेज, २०५८ ।

जनगणना, काठमाडौं : केन्द्रीय तथ्याङ्क विभाग, २०५८ ।

थापा, धर्मराज र सुवेदी, हंसपुरे, नेपाली लोकसाहित्यको विवेचना, काठमाडौं : त्रि.वि. पाठ्यक्रम विकास केन्द्र, २०४१ ।

मोक्तान, धनबहादुर, बनकरियाहरू को हुन् ? एक अनुसन्धान, मकवानपुर : समाज जागरण केन्द्र नेपाल, २०६१ ।

Rai, Jyotsna, Socio-Cultural and Economic Situational of Bankariya's at Handikhola-7, Makawanpur, Thesis : 2062.

शर्मा, मोहनराज र लुइटेल, खगेन्द्रप्रसाद, लोकवार्ता विज्ञान र लोकसाहित्य, काठमाडौं : विद्यार्थी पुस्तक भण्डार, २०६३ ।

अन्तर्वार्ता लिइएका व्यक्तिहरू

१. श्री गङ्गाराम चेपाङ, हाँडीखोला-६, मकवानपुर
२. श्री गोपाल बनकरिया, हाँडीखोला-७, मकवानपुर
३. श्री धोबे बनकरिया, हाँडीखोला-७, मकवानपुर
४. श्री लालुमाया चेपाङ, हेटौँडा-४, मकवानपुर
५. श्री सन्तमाया बनकरिया, हाँडीखोला-७, मकवानपुर
६. श्री सनित्रा चेपाङ, हेटौँडा-४, मकवानपुर

परिशिष्ट खण्ड

परिशिष्ट 'क' : सङ्कलन खण्ड

स्थानीय बनकरिया जातिमा प्रचलित र प्राप्त लोकसाहित्यका विधाहरूमध्ये नेपाली भाषामा मूलपाठ भएका विधाको पूर्ण अंश प्रस्तुत परिशिष्टमा उल्लेख गरिएको छ ।

(अ) नेपाली मूलपाठ

१. लोकगीत

१.१ वनमा काँडा छ

मया तिम्रो घर कता पच्यो

मैले मया लाउनलाई सुर गच्यो

वनमा काँडा छ तिम्री उता म यता

ज्यान त टाढा छ बिरानो नसम्भ

मया गाढा छ ।

मया तिम्री आउ बस छेउमा

तिम्रो मया धेरै छ मनमा

वनमा काँडा छ ...

तिम्री विना यो मन त अँधेरो

पानी खाने गँगटे पँधेरो

वनमा काँडा छ ...

वन जाऊँ तरुल खन्नुलाई

आ'को म त तिम्रीलाई भन्नुलाई

वनमा काँडा छ तिमी उता म यता
ज्यान त टाढा छ बिरानो नसम्भ
मया गाढा छ ।

(स्रोत : धोबे वनकरिया, हाँडीखोला-७)

१.२ ठाडो खोला

ए ठाडो खोला काँडाको सोला
यसै जीवन बित्लाको भेट होला – २
ए गाई त दुहुँ ढुङ्ग्रोमा मोई छैन
गरिवेको बोल्दिने कोही छैन – २
गाईले घाँस के खान्थ्यो को नि
काटें मैले डाँडाको मोहोनी-२
ए सररर लेऊ डोरी बाटेर
बेर भो मया जाउँ डाँडा काटेर-२
पैसा माऱ्यो तीया र चौकाले
भेट भयो बेला र मौकाले-२
ए लाउने भए लाऊ मया लाउनेले
नलाऊ मया छोडेर जानेले-२
ए ठाडो खोला काँडाको सोला
यसै जीवन बित्लाकी भेट होला-२

(स्रोत : सन्तमाया वनकरिया, हाँडीखोला-७)

१.३ फूलमयाको गाउँ

फूलमयाको गाउँ सानो
फूलमयाको गाउँ
सुसेलेर बोलाउँदा नसुन्ने
कस्तो कोल्टे ठाउँ
हाम्रो स्कुल जस्ताले छाएको
जस्तामाथि रङपालिस लाएको
फूलमयाको गाउँ ...

तिर्खा लागे खाऊँ पानी कुवाको
 मया लाग्छ मलाई त बुवाको
 फूलमयाको ...
 गाई चर्ने धोबेको बगर
 स्कूल पढ्ने हाम्लाई छ रहर
 फूलमयाको गाउँ ...
 भोक लागे के खाने तिउन
 गरिबेलाई गाह्रो भो जिउन
 फूलमयाको गाउँ
 फूलमयाको गाउँ ...

(स्रोत : वर्ष ११ की शान्ति र

वर्ष ९ की माया बनकरिया, हाँडीखोला-७)

२. लोककथा

२.१ राजाका सात भाइ छोरा

एकादेशमा एउटा राजा थिए । उनका सातभाइ छोरा थिए । सातभाइ छोराहरू जङ्गलमा मिलेर सिकार गर्न जान्थे । यसरी दिन बित्दै गयो । केही समयपछि राजाले सातै भाइको विवाह गरिदिए । सबैको बच्चा जन्मिए । एकदिन राजाले ज्योतिषीलाई हात हेराए । मेरा बुहारीमध्ये कुनचाहिँ बुहारी लच्छिनकी छ भनेर सोधे । ज्योतिषीले कान्छी बुहारी अलच्छिना छ भन्यो । त्यहीबेला राजाको मौजा खडेरी परेर सुकेर गएको थियो । ज्योतिषीले कान्छी बुहारीका कारण यस्तो भएको भन्यो । ज्योतिषीले कान्छी बुहारीलाई काटेर इनारमा हाल्नुपर्छ अनि मात्र पानी पर्छ भन्यो । एउटी बुहारी मारेर सबैलाई सुख-सुविधा हुन्छ भने किन नमान्ने ? भनेर राजाले कान्छी बुहारीलाई मार्ने निधो गरे । दिदीबाट यो सबै कुरा थाहा पाएर कान्छी बुहारी त्यहाँबाट भागी । यसरी भागेको देखेर उसको लोग्नेले सोध्यो । कान्छीले सबै कुरा भनी । त्यसपछि दुवैजना त्यहाँबाट भागे । जाँदाजाँदा एउटा राक्षसको घरमा पुगे । तिर्खा लागेको थियो । पानी खान भनी घरभित्र जाँदा तालाबन्द रहेछ । चाबी भेटेर ढोका खोलेर हेर्दा त भित्र राक्षस पो रहेछ । डराइडराई दुवैले पानी खाए । घरमै सिकार आएको देखेर राक्षस खुसी भयो । उनीहरूले आफ्नो हाल बताएपछि राक्षसले छोरा

बनाएर पाल्ने भन्यो । दुवै लोग्नेस्वास्नी खुसी भएर त्यहीं बस्न थाले । यसरी रहँदैबस्दै जाँदा लोग्ने सिकार खेलन गएको मौका पारी स्वास्नीचाहिँ राक्षससँग भुल्न थाली । राक्षससँग मिलेर आफ्नो लोग्ने मार्न षड्यन्त्र गर्न लागी ।

एकदिनको कुरा हो, उसले लोग्नेलाई मार्ने तयारी गरी । यो कुरा थाहा पाएर लोग्नेले भनेछ 'मैले तिमिलेलाई बचाएर ल्याएँ । तिमिचाहिँ मलाई नै मार्न खोज्छौ, लौ मार ।' त्यसपछि स्वास्नीले उसलाई मारेर दाहिने हात र खुट्टा एउटा सन्दुकमा हालेर खोलामा बगाइदिई । अनि राक्षससँग गई । तर राक्षसले 'आफ्नो लोग्ने मार्नेको के विश्वास म तिमिलेलाई भित्र्याउन सकिदैन' भन्यो । त्यसपछि रुँदै फूलमती मैयाँ भएठाउँमा गई । फूलमती मैयाँले सबै कुरा सुनेपछि उसको लोग्नेलाई बचाइदिई । पछि लोग्नेले त्यो राक्षसलाई मान्यो । राक्षसनीलाई आफ्नो राज्यमा लगेर काटेर इनारमा हालिदियो । अनि पानी परेर सबै खुसी भए । लोग्नेस्वास्नी राक्षसको घरमा गई खुसीसाथ बस्न थाले । सुन्नेलाई ... ।

(स्रोत : धोबे बनकरिया, हाँडीखोला-७)

२.२ भ्यागुताले हात्ती निलेको

एकादेशमा बाबु र छोरा थिए । छोरो धेरै गफाडी थियो, ऊ सधैं उल्टाउल्टा काम मात्र गर्थ्यो । उसका साथीहरूले उसको नाम नै गफाडी राखेका थिए । एकदिन बाबुछोरा घुम्न गएका थिए । बेलुका घर फर्कदा भयानक जङ्गलमा बास बसे । चौतारो, पोखरी पनि भएको हुँदा उनीहरू त्यहीं बास बसे । रात बित्दै जाँदा जङ्गल सुनसान हुँदैगएको थियो । बाबुछोरा कुराकानी गर्दै थिए । त्यसैबेला एउटा ठूलो हात्ती पोखरीतिर आयो । यो देखेर छोरो डराउँदै सुटुक्क बाबुको कानमा हात्ती आएको कुरा बतायो । बाबुले हल्ला नगरी चुपचाप बस भन्यो । दुवैजना चुप लागेर हेरीमात्र रहे । हात्ती पोखरीको डिलमा बसेर पानी खान लाग्यो । यत्तिकैमा पोखरीबाट एउटा कालो वस्तु निस्क्यो र त्यो हात्तीलाई निली पोखरीमा हामफाल्यो । त्यो कालो वस्तु भ्यागुतो थियो । यो घटनाले बाबुछोराको सातो गयो । छोरोले डराउँदै बाबुलाई त्यो हात्ती निल्ने कालो जन्तु भ्यागुतो हो ? भनेर सोध्यो । बाबुले हुन त हो तर यो कुरा कसैलाई पनि नभन्नु भनेर सम्झायो । यदि अरूलाई भनिस् भने कसैले पनि यो कुरा पत्याउँदैनन् र हामीलाई नै उल्लू बनाउँछन्, त्यसैले जबसम्म अरूले पनि यस्तो घटना देख्दैनन् तबसम्म हामीले

अरूलाई भन्नु मूर्खता हुन्छ । भोलिपल्ट बाबुछोरा घर पुगे । छोराका साथीहरूले यतिका दिन कहाँ गएका थियौ भनेर सोधे । उसले सबैकुरा साथीहरूलाई सुनायो, तर साथीहरूले यो कुरा पत्याएनन् । यदि यो कुरा सत्य हो भने बाजी राखौं, गफाडी केटाले पनि स्वीकान्यो । आफ्नो सबै सम्पत्ति बाजी राखी साथीसहित बाबुलाई सोध्न गफाडीले साथीहरू लिएर घर गयो । बाबुले उल्टै छोरोलाई भ्यागुताले पनि हात्ती निल्न सक्छ ? भनेर गाली गयो । उसले बाजी हान्यो । बाबुछोरा सुकुम्बासी भई जङ्गलतिर लागे । जङ्गल फडानी गरी बसोबास गर्न थाले । घरमा भएको उनीहरूको भैंसी ब्यायो । त्यो भैंसीको पाडोलाई दूध खुवाउने बेलामा धारामा लगेर नुहाई तीनपटक भैंसीलाई घुमाएर मात्र पाडोलाई दूध खान दिन्थे । यसरी केही दिनपछि त्यो पाडो दूध खानुभन्दा अघि आफैँ धारामा गई नुहाएर मात्र दूध खान थाल्यो । एकदिन त्यो गफाडी केटाले आफ्ना साथीहरूलाई भेट्यो । आफ्नो घरको पाडोले नुहाएर मात्र दूध खाने गरेको कुरा सुनायो । त्यस्तो हुन सक्दैन भन्दै उसका साथीहरूले बाजी राख्ने भने । गफाडीले पनि बाजी राख्न स्वीकार गयो र साथीलाई घर ल्याएर त्यो दृश्य देखायो । साथीले बाजी हारे, गफाडीले जित्यो र आफ्नो पहिलाको सबै सम्पत्ति फिर्ता पायो । सुन्नेलाई ...

(स्रोत : लालुमाया चेपाङ, हेटौँडा-४)

२.३ दुहुरी छोरी

एकादेशमा एउटा परिवार थियो । बाबु, आमा र छोरी थिए । आमा मरेपछि बाबुले कान्छी स्वास्नी ल्याउँछ । कान्छी स्वास्नी (सौतेनीआमा) ले छोरीलाई ज्यादै हँला गर्छे । एकदिन बाबु दसैं खर्च कमाउन सहर जाने कुरा गर्छे । जानेबेलामा छोरीलाई आमाले अह्नाएको केही काम नगर्नु भनी जान्छे । सौतेनीआमाले छोरीलाई खूब सताउँछे । एकदिन सौतेनीआमाले छोरीलाई एकमुरी धान हातैले नङ्ग्याउनु नत्र तँलाई मारिदिन्छु भन्छे । छोरी कसरी नङ्ग्याउने भनेर रुन्छे । त्यहीबेला धान खाने चराहरू आएर किन रोएकी दिदी भनेर सोध्छन् । सबै कुरा सुनेपछि चराले हामीलाई केही खान देऊ, तिमीले पीर गर्नु पर्दैन हामी तिमीलाई सहयोग गर्छौं । भन धान कहाँ छ हामी त्यो सबै धान नङ्ग्याइदिन्छौं भन्छ । छोरी खुसी हुन्छ । चराले सबै धान एकैछिनमा नङ्ग्याइदिन्छ । अनि उसले चरालाई केही खान दिएर पठाउँछ । आमा पानी लिएर आउँछे । छोरीलाई सकिस् भनेर सोध्छे । छोरीले सकें भन्छ, बल्ल बाँचिस् भन्छ । त्यसपछि फेरि कान्छीआमाले छोरीलाई

एउटा प्वाल परेको गाग्री दिएर पानी ल्याउन भन्छ । प्वाल परेको गाग्रीमा पानी कसरी ल्याउने भनेर छोरी दुःख मान्दै रुँदै धारामा जान्छ । धारामा गाग्री थापेर छोरी रोइरहन्छ । गाग्री भरिदैन, छोरी भन् जोडले रुन्छ । यसरी रोएको सुनेर एउटा भ्यागुताले दिदी किन रोएको भनेर सोध्छ । उसले कान्छीआमाले भनेको सबैकुरा भन्छ । भ्यागुताले पीर नमान्नु म छुँदैछु नि भन्छ । अनि भ्यागुताले त्यो प्वालमा मलाई राख्नु म प्वाल टालिदिन्छु अनि पानी लगेर खन्याउनु अनि मलाई छाडिदिनु भन्छ । छोरीले त्यसै गर्छ । घर पुगेपछि कान्छीआमाले सोध्छ सकिस् भनेर । छोरीले सकें भन्छ । अनि कान्छीआमाले बल्ल बाँचिस् भन्छ । यसरी दुःख दिने कान्छीआमा छोरीलाई अझ दुःख दिन्छ । एकदिन फेरि कान्छीआमाले छोरीलाई काट्ने र नाम्लो नलगी जङ्गलबाट एक भारी दाउरा ल्याउन भन्छ । छोरी काट्ने र नाम्लोविना कसरी दाउरा ल्याउने भनी रुँदैरुँदै जङ्गल जान्छ । जङ्गलमा रोइरहेको बेला उसलाई बाघ-भालुले भेट्छ र सोध्छ । उसले कान्छीआमाले भनेको सबैकुरा सुनाउँछ । पीर गर्नु पर्दैन हामी छौं नि भनेर बाघभालुले दाउरा भाँचन सघाउँछ । दाउरा भेला गरेपछि अब केले बाँधेर लग्ने भनेर ऊ रुइरहन्छे । त्यही बेला एउटा सर्प आएर दाउराको भारीमा बेरिन्छ र भन्छ अब दाउरा लैजाऊ अनि घर पुगेपछि मलाई छाडिदिनु पीर नगर । अनि उसले दाउरा घरमा लगेर सर्पलाई छाडिदिन्छे । कान्छीआमाले ल्याइस् भनेर सोध्छ । उसले ल्याएँ भन्छ । बल्ल बाँचिस् भन्छ । जस्तै कठिन काम लगाउँदा पनि छोरीले गर्न सकेको देखेर कान्छी आमा छक्क पर्छ । कान्छीआमा छोरीलाई धेरै हँला गर्ने र बोक्सी पनि हुन्छ । एकदिन फेरि कान्छीआमाले छोरीलाई दसैं पनि आउन थाल्यो सालको पात ल्याउनु भन्छ । छोरी कस्तो-कस्तो कठिन काम त गर्‍यो यो जाबो पात त ल्याइहाल्छु नि अब त दसैं पनि आउन थाल्यो मेरो बुवा पनि आउँछन् भनी खुसी हुँदै जङ्गल जान्छ । जङ्गल पुगेर एउटा सालको रूखमा चढेर पात टिप्छ । पात टिपेर रूखबाट ओर्लन खोज्दा रूखमा काँडैकाँडा हुन्छ । ऊ रूखबाट ओर्लन सक्दैन । ऊ रूखमा बसेर रोइरहन्छ । कसैले पनि सुन्दैन । भोक र तिर्खाले उसलाई धेरै सताउँछ । अनि उसले चरा हुन पाए पनि हुन्थ्यो भन्छ । ऊ रूखमै मर्छ । अनि चरा हुन्छ । बुवा घरमा आउँछ । छोरीलाई सुनौलो माला ल्याइदिएको हुन्छ । उसले छोरी खै भनेर सोध्छ । कान्छीआमाले पात लिन जङ्गल गएकी त्यो अल्छी अझ आएको छैन भन्छ । बाबु जङ्गलमा छोरी-छोरी हेर मैले तिमीलाई सुनौलो माला ल्याइदिएको छु आऊ छोरी भनेर बोलाउँछ । तर छोरी कहीं कतै बोल्दैन ।

धेरैबेरपछि एउटा चरा आएर बाबुको कुममा बस्छ । त्यही चरा नै उसकी छोरी हुन्छ । त्यो चराले कान्छीआमाले गरेको सबैकुरा भन्छ । बाबुले किन त्यस्तो काम गरेको त ? मैले नगर्नु भनेको थिएँ त भन्छ । काम नगरे मारिदिन्छु भन्थ्यो आमाले त्यही भएर काम गरें भन्छ । अनि त्यो सुनौलो माला चरालाई लगाइदिन्छ । अब टाढा नजाऊ घर नजिकै बस है भन्छ । केही समय घर नजिकै बस्दै अनि जङ्गलतिर जान्छ । सुन्नेलाई सुनको माला भन्नेलाई फूलको माला यो कथा वैकुण्ठ जाला भन्ने बेलामा खुर्खुरु आइजाला ।

(स्रोत : लालुमाया चेपाङ, प्रत्यक्ष वार्तामा)

२.४ राजाको छोरा

एकादेशमा एउटा राजा थियो । उसका सन्तान भएका थिएन । उसले सन्तान होस भनेर धेरै दान-धर्म गर्‍यो । एकदिन उसको घरमा एउटा साधू आयो । साधूलाई राजाले आफ्नो छोराछोरी नभएको भन्यो । साधूले अब केही समयमा तिम्रो छोरा हुन्छ तर त्यो छोरा पन्ध्र वर्षको भएका दिन कालो सर्पले टोकेर मर्छ भन्यो । यो कुरा सुनेर राजा खुसी र दुःखी भयो । छोरा जन्मन्छ भनेर खुसी भएको राजा पन्ध्र वर्षमा छोरो मर्छ भनेर दुःखी भयो । केही समयपछि राजाको घरमा छोरो जन्म्यो । सबै खुसी भयो । राजाले आफ्ना सबै रैतिलाई भोज खुवायो । सबै खुसी भयो । यसरी दिन बित्दै गयो । राजाले छोरोलाई दरबारभन्दा बाहिर जान नदिई दरबारभित्रै राखिराख्यो । छोरो अत्यन्त राम्रो, आज्ञाकारी थियो । पढ्दै र बढ्दै जाँदा छोरो लक्का जवान बन्दै गयो । छोरोको हेरचाह गर्न राजाले धेरै मान्छे राखेको थियो । जब राजाको छोरो चौध वर्षको भयो तब भने राजालाईप भन् चिन्ता पर्‍यो । यसरी दिनहरू बित्दै गयो । राजाले छोरोलाई चारैतिर पर्खालले घेरेको पाले, पहरा दिएको घरमा राख्यो । कतै सानाठूला प्वाल भए टाल्न लगायो । कहीं कतैबाट सर्प आउन सक्दैन भनेर राजा ढुक्क भयो । जब राजाको छोरो पन्ध्र वर्ष लाग्ने दिन आयो त्यसदिन भने राजाले छोरोलाई काखमा राखेर वरिपरि पाले पहरा हातमा तरवार बोकेर राख्यो । कतैबाट सर्प आउने सम्भावना थिएन । जब पन्ध्र वर्ष पुग्यो त्यतिबेला राजाको छोरोलाई हाच्छ्यूँ आयो । हाच्छ्यूँ गर्दा नाकबाट एउटा सानो सर्प निस्केर तुरुन्तै राजाको छोरोलाई टोक्यो र राजाको छोरा मर्‍यो । सुन्नेलाई ... ।

(स्रोत : सनित्रा चेपाङ, हेटौँडा-४)

२.५ राजाको आयु

उहिले एकादेशमा एउटा राजा थियो । राजाले मन्त्रीहरूसँग मिलेर, सल्लाह लिएर राम्ररी काम गर्थ्यो । राजा सबैलाई चाँडै विश्वास गर्थे । शत्रुलाई पनि ढिलो मात्र चिन्थे । कसैले हाँसेर केही भन्यो भने उनी तुरुन्तै विश्वास गर्थे । एकदिन राजाको एउटा शत्रुले एकजना ज्योतिषीलाई दरबारमा पठायो । ज्योतिषी सिपालु छ भन्ने ठानी राजाले हात देखाए । ज्योतिषीले राजाको हात हेरेर दुःख मानेभैं गन्यो । राजाले के भयो भनेर सोद्धा खै के भनूँ हजुर भन्यो । राजाले भन त के भयो, मलाई नढाँटी भन जे भए पनि म सुन्न तयार छु भनी राजाले जिद्दी गरे । त्यसपछि त्यो ज्योतिषीले पनि हड्बडाएभैं गरी अब दुई महिनामात्र बाँच्ने आयु छ भनेछ । यो कुराले राजालाई खुब चिन्ता पन्यो । चिन्ताले राजा दुब्लाउँदै गएर बिरामी परे । यो खबर मन्त्रीले थाहा पाएछ । मन्त्रीले ज्योतिषीलाई बोलाएर राजाको आयु कति छ भनेर सोधे । ज्योतिषीले २० दिन बाँकी छ भन्यो । यो कुरा सुनेपछि मन्त्रीले तिम्रो चाहिँ आयु कति छ भनी ज्योतिषीलाई सोध्यो । ज्योतिषीले २० वर्ष छ भन्यो । यो कुरा सुनेपछि मन्त्रीले तरबार फिकी ज्योतिषीलाई तुरुन्तै काट्यो । राजाले यो के गरेको भनेर सोधे । २० वर्ष बाँच्ने ज्योतिषी त मन्त्रीले महाराज । यसलाई मारेर हजुरको आयु थपेको भनेछ । सुन्नेलाई ... ।

(स्रोत : लालुमाया चेपाङ, हेटौँडा-४)

३. गाउँखाने कथा

- | | |
|---|---------------|
| - आफू भने थाङ्ने घोडा चढी माग्ने, के हो ? | - घुम |
| - भुँडे गोरुको एउटा सिङ, के हो ? | - जाँतो |
| - एकमुठी खर घुमाउने घर, के हो ? | - छाता |
| - आमा छाद्छे, छोरी खान्छे, के हो ? | - पानी सारेको |
| - जति-जति तान्यो, उति-उति सानो, के हो ? | - चुरोट |
| - खै खै बाजे म अघि जाऊँ, के हो ? | - लौरो |
| - कान तान्दा मुख बाउँछ, के हो ? | - थैली |
| - चोर्छ चोर होइन, ओडारमा बस्छ बाघ होइन, के हो ? | - मुसो |
| - एकखुट्टे धामी थरथरी कामी, के हो ? | - जुको |

(स्रोत : धोबे बनकरिया, हाँडीखोला-७)

४. उखान/टुक्का

- जुन जोगी खाए पनि कानै चिरेको
- हगी सक्यो दैलो देख्यो
- अकबरी सुनलाई कसी लाउनु पर्दैन
- अघाएको भन्छु डाँडापरि खाऊँ, भोको भन्छु डाँडावारि खाऊँ
- अगुल्टाले हानेको कुकुर बिजुली चम्किँदा तर्सिन्छ
- अर्काको नासो गलाको पासो
- आए आँप गए भटारो
- आँखा लडाउनु
- नाक काट्नु
- माटो खानु
- कानमा तेल हालेर बस्नु
- डाँडाको जून
- धोती न टोपी
- बाँदरको हातमा नरिवल
- हातको मैलो
- छेपाराको उखान
- कुरा काट्नु
- आँखा चिम्लनु
- खोलाको गीत

(स्रोत : धोबे र गोपाल बनकरिया, हाँडीखोला-७)

(आ) बनकरिया भाषा : मूलपाठ

स्थानीय बनकरिया जातिमा हाल प्रचलित र प्राप्त मातृभाषामा मूलपाठ भएका विधाको पूर्ण अंश यस परिशिष्टमा राखिएको छ ।

१. लोकगीत

१.१ अधि बढ्चु दुसकाया (अधि जाऊँ सानीकान्छी)

- केटा : किम गाताड पराती नानी
 वाड इताड जाडचुहै चिनजानी
 अधि बढ्चु दुसकाया मिकान्छी माया लगाउचु
- केटी : डाको किमपाइ सिलिङ्गे परा
 दुसो बेलानोय दैसब कुरा
 अधि बढ्चु ...
- केटा : खाइयाकाइ छेउसा वाडती मुअमा
 माया लाउसा कम्मर कसमा
 अधि बढ्चु ...
- केटी : माया लाउसा कम्मर कसलाड्
 नाड्ले डाको दइति डा वाडालाड्
 अधि बढ्चु ...
- केटा : मनको कुरा तोखेनो याज्योकाइ
 बाडबोडो डायालाई देउताकाइ
 अधि बढ्चु ...
- केटी : नाडी दैती डाकाइले छान्तेकान
 डिको पुकार देउताइए सामाकान
 अधि बढ्चु ...
- केटा : नातो नोती मुल्याम गन्धन
 पान्चु द्यापाइ मायाको बन्धन
 अधि बढ्चु ...
- केटी : दुःखसुख ब्रकेब्रकले साँच्यु
 खोले ख्यामा नितिले पेचु
 अधि बढ्चु ...

(स्रोत : सनित्रा चेपाड र लालुमाया चेपाड, हेटाँडा-४)

१.२ **आम्फा जेसा (भोर्लाको पातमा)**

आम्फा जेसा, धातोलाई सम्माखा
 रुड्खा यापा आसदै अम्माखा
 ऐया ... ऐया ...
 ए हान्पा दन्सा माग्लुको लोत्योरो
 दैति – याना निग्लिमा कोत्योरो
 ऐया ... ऐया ...
 ए माया आम्जेता वाड्तेला
 जेकी दिला एड्काया नितेला
 आम्फा जेसा धातोलाई सम्माखा
 रुड्खा यापा आसदै अम्माखा
 ऐया ... ऐया ...

(स्रोत : धोबे बनकरिया, हाँडीखोला)

१.३ **डाको किमपा (मलाई छोडी कहाँ गयौ ?)**

डाको किमपा, याडदाखेल रिचक
 नाडी जाड्ती डा स्यावा बिजक
 घासै ताड्सा राडको कायालु
 डाकाइ फेतो गाड आलो मायालु ।

(स्रोत : गड्गा चेपाड, हाँडीखोला-६)

१.४ **न्वागीगीत**

गोल ख्याका दलबन्दी
 नाडो डाको रीडको दाम
 साइरो दाम रोसै नासु
 इच्छा डाको लैबड डाको
 मान भारा दरा मारा
 नाडनीकीको रासीमाल
 काईक्या दस माल काईक्या

रोगै नाच्य दोव नास्य
 लोडवा वैद्य, सिडसर वैद्य
 लिडसर धनी सौदिड नाचुड
 दान्याम जुत्त बकन्याम खेल
 स्याहाकी खोरन्ते नाचुड
 लेवती नाचुड ओइरिन्ते खोला
 मैरिन्ते खोला औदानी आम नास्ती ।

(स्रोत : गोपाल बनकरिया, हाँडीखोला-७)

१.५ आशीर्वादमन्त्र

भइसेइ फैलिसा
 दुबोलेखा जरिसा
 ऐसालु लेखा
 पहाड राड
 मौली पा
 धैली ति आ पा ।

(स्रोत : धोबे बनकरिया, हाँडीखोला-७)

२. लोककथा

२.१ बाको माइत (कुखुराको माइत)

याज्याड गाउँखा याजोमान्ता मुओताड । ओको निज्यो मेरुलम मुओ ताडखेतो । जेडीकाई हेला बाडाताड । कान्छीकाई खे माया जाडथो खेतो । यात दिन जेठी वाको माइतताड आल्सा कुरा लैको मनहाड सोचती वाकाइ आहारा लात्ती आलाताड । आल्दाआल्दा गलामा ढामालो गाउँ खाताड दाहा । ओसैओ जेठीइताड ओ गाउँको मान्ताकाइ होताकान डीको वाको माइत आल्सा ल्याम गाहाडसै आल्सा दहितीताड क्रमश ओ गाउँको मान्ता लमकाइ होत्तहै होत्तहै आलाताड । ल्याम छुयानो वापत ओकाइए सवइ यायाजो काम जाड्सा लाउकानी । क्रमशः वाको, मिक्षाको, थोरको, भैसीको, घोडाको, हात्ती इत्यादिको किल वाइतीकान, आता । ओसै ओ जेठी वाको माइत दाहाती वाकाइ कनिका वार्ती वालमकाइ क्याकान । वाको कनकान ओइ ओ जेठीकाइ चेउती स्वागतताड जाडाकान । चड्साकाइ सिडको पिर्का या सुनको पिर्का दाहइति

होत कान । ओ जेठी सिडको पिर्काखा चुडनाड दाहयो बेला सुनको पिर्का वान्ती वयाकान । फेरि आमजेसा वयो बेलाहाड सुनको थाल खा या सिलावरको थालखाप दाहइती दाया । सिलावरको थाल दाहइती दाया तर सुनको थालखा लै वयाकान । किम फर्कसा लाग्यो वेलाहाड खायो उपहारसहित ओकाइ सुनको पिर्का र थालमा ओ वाको माइत सै वयाकानी । ओ वाडो बेलाहाड पहिले वाडदै वाडो काम वापत ओकाइ गामीको मान्तालमी हात्ती, घोडा, भैसी, थोर, मेक्षा वा जाइती यायाजो उपहार ताड वयाकान । अब ओकाइ दाहातो सम्पत्ति लात्ती किम पाह्या । जब ओ किम पाह्या किमको भाउइ कान्छीकाइ फेती जेठीकाइ मायाताड जाइखा थालाकान् । जेठीकाइ माया जाडो चेउती कान्छी रिस वाइती ओमा वाको माइत पाहीनाड च्याती आला कान्छीपाइ आल्सापाइ आल्ताड तर आइ ल्याम होत्तदापाइ ओमिइ अह्नायो काम जाइमाती आलाताड् वाको माइत दाहातीमाताड् वाकाइ आहारा आल्मालो खेतो । वालमी ओकाइ त्यार्सा वोडाकान । वाको धनियाइ स्वागत जाडो बेलाहाड सुनको पिर्काखा च्युड्ना या सिडको पिर्काखा च्युड्ना च्याओ वेलाहाड सुनको पिर्काखा च्युड्ना च्याआ । आम वैसा खेओ बेलाहाड सुनको थालखा जेनाड या सिलावरको थालखा ते जेनाड च्याओ वालाहाड सुनको थालखा च्याआ । ओहाड सै विदा स्याउती दाओ बेला सवैकाइ यायाजो उपहार तेयाकान तर सुरमा बइनिली । ओसै ओपाइ सोहोलै किम च्यादैच्यदै ह्याना । ओ दिनसै जेठी र कान्छी खात्ती मुआताड ।

(स्रोत : सनित्रा चेपाड, हेटौंडा-४)

(देवनागरी लिपि चेपाड भाषा)

२.२ मान्ता र चिडलान (मान्छे र वनमान्छे)

याज्याड गामीहाड सोम जना ताड परिवार मुतोना । मकै सुक्सा बेलाहाड आपा हलो चम्साकाइ आलोखेतो । ओ निसको गोइचोको म्याड वुम्पे गम्याज्याकान । ओ वेलाहाड चिडलानको विगविगी मुओताड । ओ चिडलानइ वावुकाइ सातीताड जे आकान । कान्छी ऋतकाइ चिनोको रुपहाड गम्याकान । रामस्याउदै आल्कान । किमसै चोमाचाइ गोट्आल्कान । ए आपा प्यादाप्यादै ओचिडलान पो साइदैसाइदै वाडाकान किमहाड वाडती ओ ! चोमाचा डाकापाइ तोलाकइ छुसछुरी मिक खाइडलो, सबै म्हे: साताआकान अति आम बयाकान । आम जेदै मुओवेलाहाड चोइ म्हे: काइए हल्लाइती ओ मान्ताकाइ कनोबेला ओइ हाको मिक खाइडलो चलाउजेल्याम प्याना । ओ चोकाइ लैको आपा खेलो झ्यान्ती बाहिर दुडती आमाकाइ ल्की ओन्सा आल्प्सा कि आल्सा झ्यान्ती, ओ मान्ता डिको आपा खेलो चिडलाना हो । दिगीलै कच्यौजेसा प्याती लोहाड लैको दुरकाइ ओ चिडलानई गोटाकान चोकाइ ल्की चुरठाडलो प्यासा

लाइती ओचोमाचा योजा चिन्द्रो लात्ती लवा । पाहिदा पाहिदा ब्राओ ओदारहाड गोरताडा दाहाताइ । ओ चिडलाइ, चोमाचा ! चोमाचा प्यादै गोत्दाताड दुरयी चोकाइपाइ ल्की थुरदाडलो झ्यान्ती झ्यान्ती मुआ । नातोबेर स्यावाकान, ओकाइ रिस वाडती बाहिर दुडा ओइ चोमाचा चेउलो ओकाइए रिसइ चुर स्यावती लैको चोकाई ओहाइलै किमको खोपीहाड आपाको ऋतको ब्रेह सहित गम्ती ओ चोमाचाकाइ बोडल्याड दाहाकान । चिडलानइ लैको मन्त्रसै चोमाचा गाहाड मुना छ्यान्ती बयू प्यादै मन्त्रताड जाडा ओ मन्त्रादी ओ चोमाचा यी ल्युम्पुकहाडले मुना छ्यान्ती बैना । तर ओमान्ताइ बुभ्रमाती लैले वागतीमुना । ल्युम्पुकहाड मुओ चोकाइ पेसताड वाड्ना पेसपेसा स्याउल स्यादस्यादै खप्साकाइ खाइएमाती चिन्द्रोहाड पेस पेना ओ चिडलान ग्रिन्तीताड जोस्ती तीहाड पोक्जेना । ओचिडलानकाइ तिइ बगाति आल्कान ओचोमाचा आसती किम वाड्ना, किमहाड पाइदा ओ चिडलानको चोलमै 'तुम्पे । तुम्पे डा ब्राउब्राउ नाडकाइ जेजे' याना । ओ चिडलानको चोलमइ तुम्पेको आपाकाइमा जेओ कुरा छ्यान्ना । ओमीइ आपाको कान्छीब्रेह तान्नानी ओ तुम्पे यउओ ओ ऋतको ब्रेहकाइ नदीको किनारहाड सुक्ती वेलसी स्याउती दुडपा य्याती सुक्ती पोडादिनको दिनहाड वाडदा त ओ वेलसी पाइए बाउतो स्याउती ओर्ती खायो खेतो । तुम्पेइ चिडलानको चोलमकाइ वेलसी तुड्लाड आल्सा य्याती सबैकाइ लात्ती वाड्ना । औ सबैकाइ सीडहाड लन्सा लाइती लैमा ब्रकलै लन्ती पछि वेलसी तुड्ती मुओवेलाहाड तुडहाड कल्यानी सीडकाइ खुर्पाइ चम्सा थालना ओमी दोजाडो य्यादा साथीलमकाइ तेका चम्पो ज्यादै चम्दा-चम्दा सीड तोहाड तोन्ना । सबै चिडलानको चोलम्काइमा तीलै वगाउती आल्कान । ओ तुम्पे छुप्ती छुप्ती किम वाडाआकान ।

(लालुमाया चेपाड, हेटौंडा-४)

(चेपाड भाषा देवनागरी लिपि)

२.३ भ्यान्जी बेला (दुहुरो)

यका देसाड मैती परिवार खेती ताड । चिको आमा सिया र बाहो कान्छी आमा ओता । कान्छी जेठीको चिकाइए सारैले हेलाजाड । आमा बैमाली क्यातमा बैमाली लैको चिकाइखे तिमतो तिमतो आम क्यान बेथी । यामको रोको लाड बेथी लेकी चोकाइए खे यामको लाड बैथी बाइ हेलाजाडी ची सा खाइमातो वित्राड बनाड हालती फेया बा किमखा बादा । भ्यान्जीबेला रया बागा र लास्टाड बन्माता बाडती । व भ्यान्जीबेलाक आला र भ्यान्जीबेला बन्माता सेवा ।

(स्रोत : धोबे बनकरिया, हाँडीखोला-७)

३. गाउँखाने कथा

- | | |
|--|--------------|
| - हात्ती छिरा पुच्छर अड्का, क्याना ? | - ग्याप-छिम |
| - सुरिलो सिङ्को नियाड नो, क्याना ? | - पन्यौ |
| - ब्राउती किमको झ्याल न ढीका, क्याना ? | - रिड |
| - आलना आलना ति चेउती रैना, क्याना ? | - जुत्ता |
| - पारि भित्ताख स्याबारी बना, क्याना ? | - मिक्को पुल |
| - आमाको ल्याइसै चो स्याहना, क्याना ? | - सिलौटा-बाड |

(स्रोत : धोबे र गोपाल बनकरिया, हाँडीखोला)

४. उखान/टुक्का

- डक्कै परमात्व धास्यौलो
- जे छ न तुडछ सियापछि लम्पसार
- लै स्यासा चील खालाका दोष
- लै ताक्ना मुडाकाइ ब्रसाइ ताक्ना घुँडाकाइ
- क्लि ओतो भ्या ढोका चेता
- रातभरि ल्याडा स्याडपा बुढी स्याक्लै
- लगया लागया मोहोनी नत्र माचा नातौले मुना

(स्रोत : धोबे र गोपाल बनकरिया, हाँडीखोला-७)